अक्तूबर 2018

दादावाणी

Retail Price ₹ 15

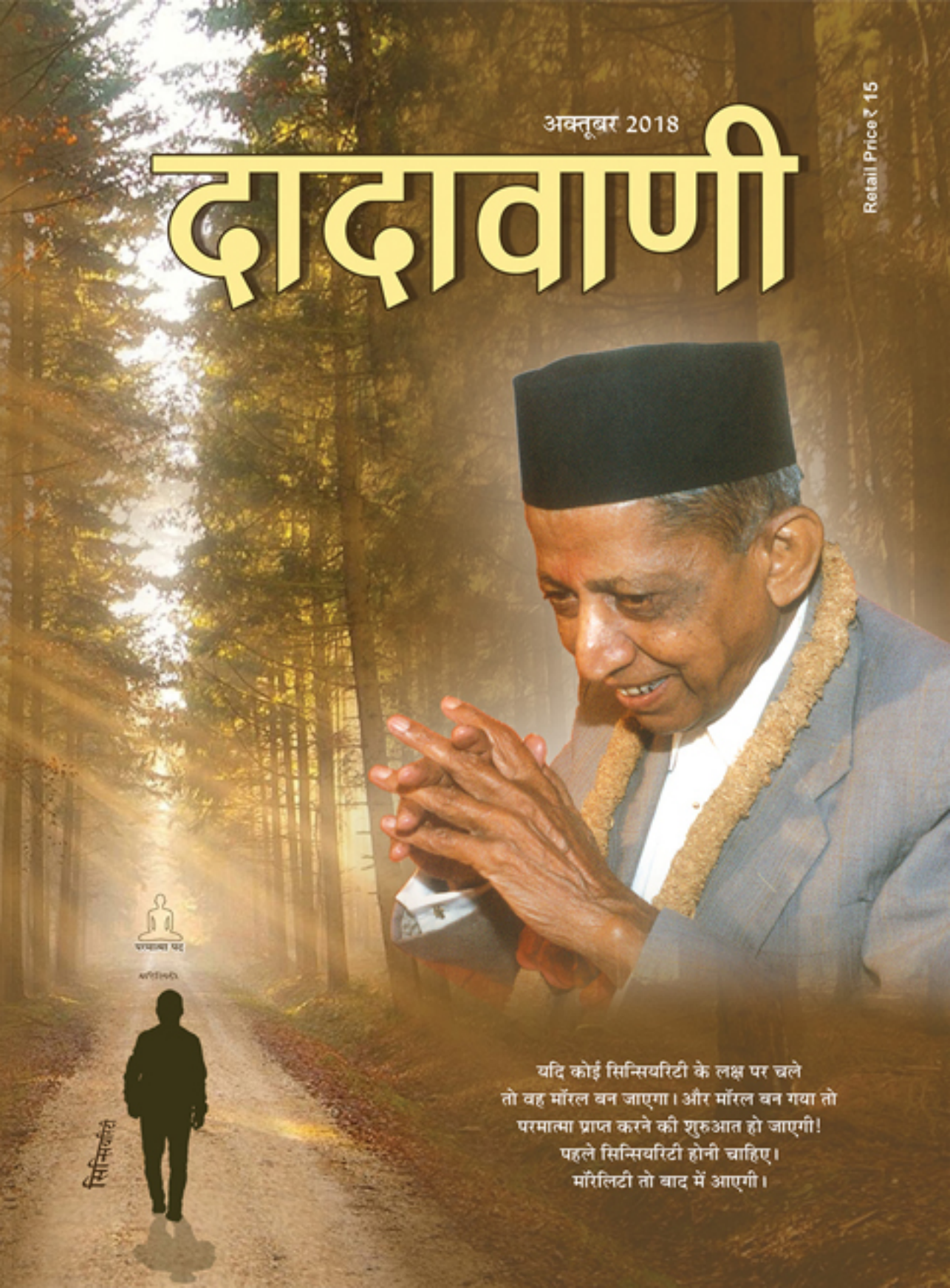

यदि कोई सिन्सियरिटी के लक्ष पर चले
तो वह मॉरल बन जाएगा। और मॉरल बन गया तो
परमात्मा प्राप्त करने की शुरुआत हो जाएगी!
पहले सिन्सियरिटी होनी चाहिए।
मॉरैलिटी तो बाद में आएगी।

वर्ष : 13 अंक : 12
अखंड क्रमांक : 156
अक्तूबर 2018
Total 28 pages (including cover)

Editor : Dimple Mehta
© 2018
Dada Bhagwan Foundation.
All Rights Reserved
Printed & Published by
Dimple Mehta on behalf of
Mahavideh Foundation
Simandhar City, Adalaj
Dist-Gandhinagar - 382421

Owned by
Mahavideh Foundation
Simandhar City, Adalaj
Dist-Gandhinagar - 382421

Printed at
Amba Offset
B-99, GIDC, Sector-25,
Gandhinagar – 382025.

Published at
Mahavideh Foundation
Simandhar City, Adalaj
Dist-Gandhinagar - 382421

संपर्क सूत्र :
त्रिमंदिर, सीमंधर सिटी,
अहमदावाद-कलोल हाइ-वे,
पो.ओ.: **अडालज**,
जि.: गांधीनगर-382421.
फोन: (079) 39830100
email: dadavani@dadabhagwan.org
www.dadabhagwan.org
दादावाणी संबंधी शिकायत के लिए:
8155007500

सबस्क्रिप्शन (सदस्यता शुल्क)

15 साल
भारत : 1500 रुपये
यू.एस.ए. : 150 डॉलर
यू.के. : 120 पाउन्ड

वार्षिक
भारत : 150 रुपये
यू.एस.ए. : 15 डॉलर
यू.के. : 12 पाउन्ड

भारत में D.D./M.O. 'महाविदेह फाउन्डेशन' के नाम से संपर्कसूत्र के पते पर भेजें।

दादावाणी

सिन्सियरिटी - मॉरैलिटी

संपादकीय

हिन्दुस्तान में दुःख किस वजह से हैं? हिन्दुस्तान में सिन्सियरिटी और मॉरैलिटी का जो सब से बड़ा धन था, उसे एक्सपॉर्ट कर दिया था। अब फिर से उसे इम्पॉर्ट करना है। यदि मॉरैलिटी बेची नहीं होती तो कोई दुःख नहीं रहता।

सिन्सियरिटी ही धर्म है। धर्म तो, अपने आपके प्रति और हर व्यक्ति के प्रति सिन्सियर रहना सिखाता है। सिन्सियरिटी और मॉरैलिटी एक-दूसरे से जोइन्ट ही हैं। सिन्सियरिटी का फल मॉरैलिटी है। मॉरल हो जाए तो परमात्मा पद प्राप्त करने की तैयारी।

दादाश्री ज्ञान होने से पहले की खुद की स्थिति का वर्णन करते हैं कि, 'हमेशा सिन्सियर' उनका चित्त पैसों में नहीं था, ममता में नहीं था। चित्त हमेशा धर्म में ही रहता था। यही इच्छा कि 'कुछ भी करके छूटना है।' पूर्ण स्थिति के बारे में बताते हैं, 'फुल सिन्सियरिटी और फुल मॉरैलिटी; इन दोनों चीज़ों की वजह से ही इस पद पर बैठा हूँ और भगवान भी मेरे वश हो चुके हैं।'

मॉरैलिटी क्या है? जगत् के किसी भी जीव को जो अच्छा न लगे ऐसा एक भी अवगुण नहीं हो, वह फुल मॉरैलिटी है। किसी को किंचित्मात्र भी नुकसान नहीं पहुँचे, ऐसी कोशिश में रहे। किसी का सुख नहीं ले लें, किसी के मन को नहीं दुखाएँ बल्कि अपने हक़ का और वह भी जो सहज रूप से मिले उतना ही भोगे, वह मॉरैलिटी है।

मॉरल अर्थात् किसी के लिए ज़रा भी मन नहीं बिगड़े। मन इन्द्रिय विषयों या क्रोध-मान-माया-लोभ में, ज़रा भी नहीं बिगड़े। किसी स्त्री पर दृष्टि नहीं बिगड़नी चाहिए। दृष्टि बिगड़ने से बीज डलते हैं और जन्मोंजन्म बिगड़ जाते हैं इसलिए दादाश्री कहते हैं कि, 'दृष्टि बिगड़ते ही प्रतिक्रमण करो।'

मॉरैलिटी और सिन्सियरिटी दोनों इकट्ठे हों, तब शीलवान कहलाता है। इगोइज़म खत्म होने के बाद शीलवानपन प्रकट होता है। यदि ओब्जाइजिंग नेचर और ईमानदारी के साथ सिन्सियरिटी और मॉरैलिटी हों तो उससे हर कोई प्रसन्न रहता है। जो मॉरल हैं उनकी बुद्धि बहुत सुंदर होती है, वह बुद्धि संसार के दुःखों को मिटा देती है। घर में से सभी क्लेश भगा देती है और मतभेद का निवारण लाती है। दादाश्री कहते हैं कि, 'मॉरल होने के बाद ही मोक्ष में जा सकते है।'

मॉरैलिटी अर्थात् क्या? हक़-*अणहक्क* की हद क्या है? यह कैसे प्राप्त होती है? ऐसे गुण प्राप्त करने के लिए किस प्रकार का जीवन जीना चाहिए। ऐसे अनेक प्रश्नों के जवाब यहाँ दादाश्री की वाणी में संकलित हुए हैं जो कि महात्माओं को मोक्षमार्ग में प्रगति करने में अवश्य सहायक होंगे, यही प्रार्थना।

जय सच्चिदानंद

पाठकों से...

'दादावाणी' सामायिक में मुद्रित पाठ्य सामग्री मूलत: गुजराती 'दादावाणी' का हिन्दी रूपांतर है। कोष्ठक में दिए गए शब्द या तो अंग्रेज़ी शब्द का अर्थ हैं अथवा शब्द का तात्पर्य स्पष्ट करने हेतु वृद्धित किए गए वाक्यांश है। यहाँ पर 'आत्मा' शब्द को गुजराती और संस्कृत की तरह पुल्लिंग में प्रयोग किया गया है। जहाँ पर भी 'चंदूभाई' नाम का प्रयोग हुआ है, वहाँ पर पाठक खुद को समझें। 'दादावाणी' के इस अंक में अगर आप कोई बात न समझ पाएँ तो प्रत्यक्ष सत्संग में पधारकर समाधान प्राप्त करें। अनुवाद में कोई कमी नज़र आए तो हमें सूचित करने की कृपा करें, ताकि भविष्य में सुधार किया जा सकें । ऐसी क्षतियों के लिए हम आपके क्षमाप्रार्थी है।

सिन्सियरिटी - मॉरेलिटी

जगत् का बेसमेन्ट : सिन्सियरिटी व मॉरेलिटी

प्रश्नकर्ता : हमारे पास जो विविध कार्यक्रम हैं न, उनमें से एक कार्यक्रम किसान भाईयों के लिए है। तो हमारी कृषि और खेती-बाड़ी की जो संस्कृति है उसके बारे में आप कुछ समझाइए न सभी को, बात किजिए न। खेती-बाड़ी से संबंधित तो सब कुछ कॉलेजों में सिखाते ही हैं लोगों को, बच्चों को।

दादाश्री : ऐसा है न, यह सब जो सिखाया है इसके पीछे सिन्सियरिटी गॉन (नष्ट) हो चुकी है।

प्रश्नकर्ता : हाँ, तो आप बताइए कि यह वह सिन्सियरिटी फिर से गेन (प्राप्त) करनी चाहिए। कुदरत में विश्वास रखना चाहिए?

दादाश्री : हाँ। सिन्सियरिटी खत्म हो चुकी है, उसी से यह दशा है अपनी। अब सिन्सियरिटी आ रही है। हमने सिन्सियरिटी और मॉरेलिटी फॉरेन में एक्सपॉर्ट कर दी थी। अब, वह इम्पॉर्ट होने लगी है। मैंने इम्पॉर्ट करना शुरू कर दिया है क्योंकि लोगों में सिन्सियरिटी आनी ही चाहिए। हिन्दुस्तान का एक-एक बच्चा ऐसा है कि जगत् का कल्याण कर दे क्योंकि हमारी संस्कृति कैसी है? कोई स्त्री रोज़ अपने पति से झगड़ा करती है लेकिन फिर भी वह अस्सी साल तक उसके साथ रहती है। अपनी संस्कृति अलग तरह की है, यों तो अपने बाकी सभी गुण बहुत उच्च प्रकार के हैं, चाहे अंडर डेवेलप (अविकसित)दिखाई देते हैं। यह तो, सिन्सियरिटी और मॉरेलिटी चली गई है उसके कारण यह दशा हुई है लेकिन वापस कुछ समय बाद आ जाएगी।

पूरे जगत् का 'बेसमेन्ट' 'सिन्सियरिटी' और 'मॉरेलिटी' दो ही हैं। वे दोनों सड़ जाएँ तो सब गिर जाता है। इस काल में यदि 'सिन्सियरिटी' और 'मॉरेलिटी' हों, वह तो बहुत बड़ा धन कहलाता है। हिन्दुस्तान में वह धन ढेरों था लेकिन अब लोगों ने वह सब फॉरेन में एक्सपॉर्ट कर दिया और बदले में 'फॉरेन' से क्या 'इम्पॉर्ट' किया, वह आप जानते हो? ये 'एटिकेट' के भूत घुस गए! उसके कारण ही इन बेचारों को चैन नहीं पड़ता। हमें उस 'एटिकेट' के भूत की क्या ज़रूरत है? जिनमें नूर नहीं है, वह उनके लिए है। हम तो तीर्थंकरी नूर वाले लोग हैं, ऋषिमुनियों की संतान हैं! तेरे कपड़े फटे हुए हों फिर भी तेरा नूर तेरे बारे में बता देगा कि 'तू कौन है?'

इम्मॉरेलिटी में भी मॉरल रहना चाहिए

जितनी सिन्सियरिटी और मॉरेलिटी परदेस में 'एक्सपॉर्ट' की है, यदि उससे डबल 'इम्पॉर्ट' करेंगे, तब काम होगा।

प्रश्नकर्ता : ये सब जो गुण हैं न, वे सब फॉरेन में ही हैं।

दादाश्री : नहीं! उनमें वे गुण हैं ही नहीं यदि कहो कि, 'वे गुण गायों-भैसों में हैं,' तो कह सकते हैं कि उन जैसे गुण इनमें भी हैं। उनमें ये गुण नहीं हैं लेकिन वह उन लोगों का सहज भाव है, वह उनका पुरुषार्थ नहीं है और हम तो अगर कुछ देर तक ऐसे प्रयोग में मॉरल रहें, तब भी वह बहुत बड़ा काम कहलाएगा। यदि ऐसी इम्मॉरेलिटी में अगर कुछ समय के लिए भी मॉरल रहे तो बहुत बड़ी बात कही जाएगी।

फॉरेन में तो, सहज भाव है। अत: वहाँ सिन्सियर मतलब सिन्सियर और इन्सिन्सियर मतलब इन्सिन्सियर जबकि अपने यहाँ तो सभी लोग इन्सिन्सियर!

कषायों में जागृति तुड़वाती है सिन्सियरिटी

यहाँ तो कोई अपने चाचा के यहाँ जाकर चाचा के बेटे से कहे, 'मेरे यहाँ दादा आ रहे हैं। मुझे उन्हें गाँधीनगर ले जाना है तो परसों मुझे आपकी गाड़ी दे देना।' वे लोग इसमें (संसार में) इतने जागृत हैं, हमारे यहाँ बहुत ज़्यादा जागृति रहती है क्योंकि वह क्रोध-मान-माया-लोभ की जागृति है न! इसलिए फिर चाचा के बेटे की जागृति में क्या आता है कि यहाँ से बीस मील जाना और बीस मील आना, चालीस मील और पेट्रोल के पैसे हम माँग नहीं सकते। तुरंत ही सारा हिसाब लगा देता है और उसे लगता है कि बेकार ही पाँच सौ का खर्चा हो जाएगा लेकिन उसके बजाय वह आपको दूसरा जवाब देता है कि 'भाई, मैं आपको देता तो सही लेकिन मेरे साहब आने वाले हैं', ऐसा कुछ बहाना बना देता है।

ऐसा क्यों? डेवेलपमेन्ट की वजह से ऐसा करता है। वह डेवेलप्ड है, इसलिए। फॉरेन वाला तो अगर कोई अच्छा इंसान हो तो, 'यस, यस' करके अपने के खर्चे पर ले जाता है क्योंकि सहज हैं बेचारे। अपने यहाँ की गाय-भैंसें भी सहज हैं। गाय-भैंसें तो पशु रूप में सहज है लेकिन ये (फॉरेन वाले) मनुष्य रूप में सहज हैं।

प्रश्नकर्ता : तो यह सारा दखल बुद्धि का है। विपरीत (उल्टी) बुद्धि!

दादाश्री : यह जो बुद्धि बढ़ी है न, वह आंतरिक बुद्धि है, क्रोध-मान-माया-लोभ वाली। जितनी आंतरिक बुद्धि बढ़ती है उतना ही दु:ख बढ़ता है। यह काउन्टर वेट है। आंतरिक बुद्धि का काउन्टर वेट क्या है? तब कहते हैं उसमें उतना ही दु:ख होता है। फॉरेन में आंतरिक बुद्धि नहीं होती, फॉरेन में बाह्य बुद्धि है और भौतिक बुद्धि है।

उनके रास्तों पर देखें तो सिगरेट का एक ठूंठ तक नहीं दिखाई देता, माचिस की तीली भी नहीं दिखाई देती। भौतिक सुख के शिखर पर बैठा हुआ देश।

प्रश्नकर्ता : लेकिन कई बार ये जो भौतिक सुख हैं न, वे परेशानी उत्पन्न करते हैं।

दादाश्री : परेशान ही करेंगे, वर्ना और क्या होगा? भौतिक सुख हमेशा सिन्सियरिटी खत्म कर देते हैं। क्योंकि हार्ट बंद हो जाता है, हार्ट की बात ही खत्म हो जाती है। जिसे यहाँ लोग दिल्लगी कहते हैं न। अब अगर मुझसे दिल लग जाए तो फिर काम ही हो जाएगा।

सिन्सियरिटी में हार्ट की ज़रूरत है और मॉरेलिटी में बुद्धि की ज़रूरत है। ये दोनों शब्द

इतने कीमती हैं कि सभी शास्त्र इन दो शब्दों में आ जाते हैं।

सांसारिक जागृति डेवेलपमेन्ट के आधार पर

प्रश्नकर्ता : अब इस असुरक्षा की भावना के सामने, सुरक्षित कैसे रहें? खुद को कैसे बचा लें? खुद का रक्षण और दूसरों का भक्षण, वह शोषण भी इसी वजह से होता है।

दादाश्री : इतना ही इस संसार का है, क्रोध-मान-माया-लोभ क्या हैं? मेरा अपना इतना और बाकी सब पराया, अंदर निरंतर यह जागृति रहती है। ये अहमदाबाद के जो सेठ हैं न, वे सेठानी के साथ के व्यवहार में हमेशा जागृत रहते हैं कि यह अगर ऐसा करके ज़्यादा माँगेगी तो मैं ऐसा सब कह दूँगा... झूठ बोलता है। सभी आमने-सामने झूठ बोलते हैं। अंदर छलकपट ही है सभी जगह क्योंकि डेवेलपमेन्ट है। वहाँ (फॉरेन में) सिन्सियरिटी है। जो सिन्सियर है, वह सिन्सियर है और जो इन्सिन्सियर है, वह फिर सिन्सियर बनता ही नहीं है, उसे साहजिक कहेंगे। अपने यहाँ जो इन्सिन्सियर है वह भी सिन्सियर बन जाता है। ऐसा सब करना आता है

जहाँ कम्प्लीट सिन्सियरिटी व मॉरेलिटी, वहाँ चारित्र बल

प्रश्नकर्ता : महान पुरुष अगर कोई वाक्य कहें और मैं भी एक वाक्य कहूँ, शायद मेरा उनसे भी ज़्यादा अच्छा हो लेकिन जैसा प्रभाव उनके कहने से पड़ता है, वैसा मेरा नहीं पड़ता। ऐसा क्यों?

दादाश्री : वह वचन का बल है क्योंकि जितना उनका शील व चारित्र, उतना ही बल! कम्प्लीट मॉरेलिटी, कम्प्लीट सिन्सियरिटी, उसी को चारित्र कहेंगे। कम्प्लीट मॉरेलिटी एक परसेन्ट भी कम नहीं। कम्प्लीट सन्सियरिटी, एक परसेन्ट भी कम नहीं, उसे चारित्र कहते हैं। जहाँ वैसा चारित्र होगा, वहाँ सब चलेगा।

यह तो गुरु कहेंगे, 'मॉरल और सिन्सियर बन। बी मॉरल और बी सिन्सियर!' लेकिन बार-बार ऐसा कहने की ज़रूरत नहीं है। 'बी मॉरल और बी सिन्सियर', ऐसा तो हमेशा से कहते आ रहे हैं। यह सुन-सुनकर तो मेरे कान पक गए। अब तो आप खुद ही बताइए कि हम किस तरह सिन्सियर बनें और किस तरह मॉरल बनें? आप वैसे बनकर, उस तरह के बनकर बताइए। कहते हैं, 'कथा सुनते-सुनते फूटे कान, तब भी नहीं आया ब्रह्मज्ञान।' लोग भी क्या करें? जब खाने को कुछ भी नहीं मिलता तब जो कंट्रोल के सड़े हुए गेहूँ मिलें तो वे ले आता है। और कहता है 'उसके बजाय ये गेहूँ अच्छे हैं।' खाने को कुछ तो चाहिए न! जहाँ पर 'बी मॉरल और बी सिन्सियर' कहते हैं, वहाँ जाता है। यों तो मैं भी वहाँ जाता था लेकिन मैं कह देता था कि 'साहब, आपको मुझे बताने की ज़रूरत नहीं है। जब आपमें दिखाई देगा तब आपको देखकर ही मैं वैसा बन जाऊँगा।'

अरे, तू मॉरल बनकर आ न! अगर तू मॉरल बन जाएगा न, तब तुझे मुझसे कहना नहीं पड़ेगा। मॉरल बनकर मुझसे कह तो मैं मॉरल बन जाऊँगा। तुझे देखते ही मॉरल बन जाऊँ वैसा चाहिए। हम जैसा देखते हैं, वैसे बन ही जाते हैं लेकिन वह खुद ही नहीं बना है न!

मुझमें जो वीतरागता है वह आप देखो, और एक बार देखने पर वैसा हो सकेगा क्योंकि मैं आपको करके दिखाता हूँ इसलिए आपको

एडजस्ट हो जाता है। यानी मैं प्योर होऊँगा तभी लोग प्योर हो सकेंगे! यानी कि कम्प्लीट प्योरिटी होनी चाहिए।

मॉरल को देखकर बनते हैं मॉरल

मैं आपसे ऐसा नहीं कहता रहता, 'मॉरल बनो' परंतु 'मॉरल किस तरह बन सकते हैं' वह बताता हूँ। मैं ऐसा कहता ही नहीं कि 'आप ऐसा करो, अच्छा करो या ऐसे बन जाओ।' मैं तो यह बताता हूँ कि, 'मॉरल कैसे बना जाता है' रास्ता बताता हूँ। जबकि लोगों ने क्या किया है? 'यह रकम और यह जवाब।' अरे, तरीका सिखा न! रकम और जवाब तो किताब में लिखे हुए हैं ही लेकिन उसका तरीका सिखा न! तरीका सिखाने वाला कोई निकला ही नहीं। अगर तरीका सिखाने वाला निकला होता तो हिन्दुस्तान की यह दशा नहीं हुई होती। हिन्दुस्तान की दशा तो देखो आज! कैसी दशा हो गई है!

ऐसा कोई व्यक्ति बताओ जो मॉरल और सिन्सियर हो। अत: हिन्दुस्तान में 'बी सिन्सियर और बी मॉरल' की ज़रूरत है।

सिन्सियरिटी और मॉरैलिटी की कुछ तो कीमत होगी न? हम इन दोनों पर ज़्यादा ज़ोर देते हैं क्योंकि ये दो चीज़ें, 'हाँ! सिन्सियरिटी और मॉरैलिटी में हमारा फुल परसेन्ट है।

यदि इस काल में सिर्फ ये दो ही चीज़ें हों तो बहुत हो गया। मेरे पास पहले से थीं। थोड़ा बहुत कलियुग का असर हो गया था, वह भी अठारह से पच्चीस साल की उम्र के बीच। उन सात सालों में कलियुग का असर हो गया था। वह भी मुझे पता चल गया था कि हम भयंकर कलियुग में फँस गए हैं लेकिन बहुत ज़्यादा असर नहीं, बहुत ही कम सिर्फ चमड़ी जले, उतना ही, हड्डी नहीं जली। लोगों ने तो इतनी इन्सिन्सियरिटी की है कि हड्डी भी जल जाए। सिर्फ हड्डियाँ ही नहीं बल्कि पूरा शरीर जलता रहता है। करोड़ों रुपए होने के बावजूद भी शरीर जलता रहता है।

सिन्सियर रह सकता है गुनाह मुक्त

भगवान कहते हैं, सिन्सियर रहो। सिन्सियर को कोई गुनाह नहीं लगता। यह जो गुनाह लगते हैं न, वे गुनाह नियम में रहकर भी लग सकते हैं क्योंकि सिन्सियर नहीं हैं इसलिए। मैंने भगवान से कहा, 'मैं क्या आपसे बँधा हुआ हूँ? सिन्सियर हूँ लेकिन आपसे बँधा हुआ नहीं हूँ। बँधा हुआ तो जहाँ शादी की है वहाँ पर हूँ लेकिन आपके प्रति सिन्सियर हूँ।'

एक सेठ थे, उनके बीस हज़ार रूपए बैंक में थे। सेठानी को यात्रा पर जाना था लेकिन वे सात साल से पैसे नहीं दे रहे थे, 'अभी बैंक में पैसे नहीं है'। तो वह अपनी पत्नी को भी धोखा दे रहा था! अपने आपको भी धोखा दे रहा था! यह किसलिए? क्या घर में विश्वास नहीं रखना चाहिए? लेकिन वहाँ पर भी कुछ और ही देखता है न।

सिन्सियरिटी ही धर्म है

हाँ! सिन्सियरिटी ही धर्म है। फिर चाहे वह स्त्री के प्रति रखो या भगवान के प्रति। आपको जहाँ ठीक लगे वहाँ रखो।

धर्म तो उसे कहते हैं जो धर्म बनकर परिणामित हो। जब कोई गाली दे या अपमान करे, उस समय यदि धर्म मदद करे तो उसे धर्म कहेंगे। कितने ही मंदिरों के सीढ़ियाँ घिस दीं,

फिर भी धर्म हाज़िर नहीं रहता। धर्म मदद क्यों नहीं करता? क्योंकि धर्म के प्रति सिन्सियर रहे ही नहीं। ये तो खुद के सगे भाई के प्रति भी सिन्सियर नहीं रहते हैं न! भगवान के दर्शन भी सिन्सियरली नहीं करता। भगवान के दर्शन करते समय बाहर निकाले जूते याद करता है या दुकान याद करता है। धर्म तो, खुद अपने आपके प्रति और लोगों के प्रति सिन्सियर रहने का कहता है, वर्ना, धर्म प्राप्त नहीं कर सकता।

प्रश्नकर्ता : धर्म प्राप्त नहीं कर सकता का क्या अर्थ है दादा?

दादाश्री : अधर्म अर्थात् उसे सुख नहीं मिलता और धर्म अर्थात् दु:ख नहीं मिलता। अधर्म दु:ख है और धर्म सुख है। जो खुद के प्रति और लोगों के प्रति सिन्सियर रहने से सुख प्राप्त होता है, वर्ना सुख नहीं मिलता। धर्म से सुख उत्पन्न होता है इसलिए लोग उसे सुख कहते हैं। अधर्म से दु:ख उत्पन्न होता है।

सिन्सियरिटी के पीछे आती है मॉरेलिटी

सिन्सियरिटी मोक्ष की तरफ ले जाती है। सिन्सियरिटी का फल मॉरेलिटी है। हाँ, थोड़े बहुत सिन्सियर है लेकिन यदि सिन्सियरिटी के *लक्ष* (जागृति) पर चला, इस रोड पर चला तो मॉरल बन जाएगा। और मॉरल बनना अर्थात् परमात्मा प्राप्त करने की तैयारी! इसलिए पहले सिन्सियरिटी की ज़रूरत है। मॉरेलिटी तो बाद में आएगी।

प्रश्नकर्ता : इसका अर्थ यह है कि सिन्सियरिटी और मॉरेलिटी एक-दूसरे से जुड़े हुए ही हैं?

दादाश्री : हाँ, ये जॉइन्ट ही हैं! यदि मॉरल खत्म हुआ तो आपके पास रहा ही क्या?

मॉरेलिटी की परिभाषा

प्रश्नकर्ता : दादा, मॉरेलिटी की डेफिनेशन (परिभाषा) क्या है?

दादाश्री : जगत् के जीवमात्र को न पुसाए, ऐसा एक भी अवगुण न हो। वह फुल मॉरेलिटी। फिर अधूरी मॉरेलिटी चला सकते हैं। जैसे स्कूल में तैतीस प्रतिशत से पास कर देते हैं न! उस तरह।

प्रश्नकर्ता : दादा, यानी कि वीतरागता ही न? कम्पलीट वीतरागता ही न?

दादाश्री : हाँ!

प्रश्नकर्ता : मॉरेलिटी यानी सज्जनता?

दादाश्री : नहीं, नहीं! सज्जनता तो आसान है। सज्जन तो कभी दुर्जन भी बन सकता है। मॉरेलिटी वाला कभी इम्मॉरल नहीं बन सकता।

मॉरेलिटी का प्रभाव

प्रश्नकर्ता : दादा ने मॉरेलिटी की परिभाषा दी हैं कि 'खुद के हक़ का जो कुछ भी आसानी से मिल जाए, उसे भोगना'।

दादाश्री : हाँ! अपने हक़ का और वह भी, वही भोगना जो कि आसानी से मिले। वह मॉरलिटी कहलाती है। अपने हक़ का यदि आसानी से नहीं मिले और माँगकर लेना पड़े तब नहीं। जो आसानी से मिल जाए, वही होना चाहिए।

मॉरल का अर्थ आप समझे न? मैंने क्या बताया? अपने हक़ का और जो आसानी से मिल जाए, वह सब भोगना। मैं क्या कहता हूँ, 'इस दुनिया में ऐसी कोई चीज़ नहीं है जिसे आप नहीं भोग सकते। सभी भोगना लेकिन वह जो आसानी से मिल जाए और वह हक़ का होना चाहिए।

प्रश्नकर्ता : दादा, आसानी से मिल जाए उसका कोई उदाहरण?

दादाश्री : ऐसा नहीं होना चाहिए कि किसी को डाँटकर कहो कि 'जलेबी ला वापस'। वह छटाँक भर (पाँच तोला) दे तो छटाँक और सेर भर दे तो सेर। जितनी खानी हो उतनी लेकिन सहज रूप से जितनी मिले उतनी।

जबकि लोग तो फिर अपने हक़ का छीनकर ले लेते हैं न! खुद के हक़ का होता है लेकिन दावा करके, कुछ भी करके, छीन-झपटकर ले लेता है। और यह क्या कहा? हक़ का और जो सहज रूप से मिले, वही फर्स्ट मॉरल। ऐसे करने से अन्य मॉरल खत्म नहीं हो जाते। यह तो फर्स्ट मॉरल। उसके बाद सेकन्ड मॉरल, थर्ड मॉरल। बाकी सब सभी मॉरल तो हैं ही न!

हक़-*अणहक्क* की विवेक बुद्धि

प्रश्नकर्ता : जो अपने हक़ का न हो, उसे लेने की वृत्ति रखे तो उसकी डिर्माकेशन (भेद) लाइन क्या है? वर्ना हर एक व्यक्ति ऐसा ही मानेगा कि 'हक़ का ही ले रहा हूँ', तो उसके लिए डिर्माकेशन लाइन क्या है? उसके लिए विवेक बुद्धि क्या है? उसकी लाइन कहाँ ड्रॉ करें कि यह हक़ का है और यह *अणहक्क* (अवैध) का है। सामान्य व्यक्ति के लिए तो यही है न?

दादाश्री : ऐसा है, अभी हक़ और *अणहक्क* का विभाजन कैसे हो सकता है? लोगों को अभी ऐसी डिर्माकेशन लाइन का ज्ञान नहीं है। यदि हम स्थूल रूप से जाँच करें तो पता चलेगा कि मुवक्किल अंदर ही अंदर परेशान हो रहा है तो इसके साथ ऐसा व्यवहार करें कि यह परेशान न हो। उसके आने पर पूछो, 'खुश हो,' तो कहेगा, 'हाँ! खुश हूँ।' खानदानी है इसलिए कहता है कि 'खुश हूँ' लेकिन ऐसा भी हो सकता है कि अंदर से दु:खी हो। अत: हमें बारीकी से देखना है कि कहीं इस व्यक्ति का मन तो नहीं दु:ख रहा न! तब आप समझना कि यह अपने हक़ का है। बाकी यह जो हक़ और *अणहक्क का* ज्ञान है, वह ज्ञानी के पास है। हर एक व्यक्ति के पास नहीं है। ज्ञानी तो समझ जाते हैं कि यह *अणहक्क* का है। आपको सामने वाले का देख लेना है।

नियमानुसार हो तो *अणहक्क* का नहीं माना जाएगा लेकिन भगवान ने नियम के साथ-साथ कॉमनसेन्स का उपयोग करने के लिए कहा है, विवेक बुद्धि! विवेक बुद्धि का उपयोग करने के लिए कहा है क्योंकि कोई बहुत सरल व्यक्ति हो, उसे पैसे की परेशानी हो और केस लड़े बिना चारा ही न हो तो हमें उससे ऐसा कहना चाहिए कि, 'सब लोगों से हम नोटिस के बीस लेते हैं लेकिन आपसे पाँच लेंगे, आपको पुसाएगा?' तब कहेगा, 'हाँ! मुझे पुसाएगा।' अपने यहाँ ज्ञान लिए हुए एक डॉक्टर हैं, वे क्या करते हैं कि जिस चीज़ के चालीस लिए जाते हैं, वहाँ पाँच लेकर छोड़ देते हैं। यदि सामने वाला ज़्यादा देने लगे तो वापस कर कर देते हैं कि, 'नहीं, तू ले जा।' उन्हें पता है कि यह बेचारा दु:खी इंसान है! वह ज़्यादा दे तब भी वापस कर देते हैं।

यदि सामने वाले का दिल जलेगा तो कल्याण नहीं हो सकेगा। नियम का उपयोग करना लेकिन विवेक बुद्धि से। नियमानुसार बीस रुपए लिए जाएँ तो वह हक़ का है लेकिन उसका दिल तो जलेगा न! इसलिए हम क्या कहते हैं कि समभाव से *निकाल* करो। समभाव अर्थात् ऐसे *निकाल* करो कि सामने वाला खुश होकर जाए।

मॉरेलिटी अर्थात् इसी कोशिश में रहें कि किसी को किंचित्मात्र भी नुकसान न हो। अभी तो ऐसे ही इंसान हैं न, जो किसी का सुख न लें, ऐसे ही इंसान है न जो *अणहक्क* का सुख नहीं लेते?

प्रश्नकर्ता : ऐसा कहिए न कि 'ले लें ऐसे हैं।'

दादाश्री : सब *अणहक्क* का ही चलाया है। *अणहक्क* का ही धन चला है। अब यदि मेरे कहे अनुसार उसमें मॉरल रहे, अब तक जो हुआ सो हुआ, तो उसके लिए मैं तुझे कृष्ण भगवान से माँफी दिलवा दूँगा लेकिन अब से तू मॉरल रहना चाहता हो तो। तब पूछा, 'माफ हो जाएगा?' मैंने कहा, 'हाँ, माफ हो जाएगा।' माफ क्यों नहीं होगा? ऐसा नहीं है कि दुनिया में माफी न मिल लेकिन मॉरेलिटी और सिन्सियरिटी होनी चाहिए।

कषाय व विषय में मन नहीं बिगड़े, वह है मॉरल

स्त्री के साथ, स्त्री संबंध में कब तक मॉरल रहा जा सकता है? जब तक उसके प्रति सिन्सियर रहें, तब तक। उसे किंचित्मात्र दुःख नहीं होना चाहिए। यानी कि अपनी पत्नी के प्रति भी मॉरल! अपनी पत्नी के साथ घूमे-फिरे लेकिन किसी और के लिए खराब चिंतन नहीं, किसी के बारे में विषय से संबंधित बिल्कुल भी खराब चिंतन नहीं करे। मॉरल मतलब किसी के लिए ज़रा सा भी मन न बिगड़े। जिसका मन इन्द्रिय विषयों में या क्रोध-मान-माया-लोभ, किसी में भी मन ज़रा सा भी नहीं बिगड़े, वह मॉरल है।

उससे भी आगे, मॉरेलिटी अर्थात् जिंदगी भर खुद की बेटी पर जो भाव आते हैं, वे सारे पुत्री भाव आएँ, अन्य कोई भाव आए ही नहीं। बहू के प्रति पुत्रवधू के भाव ही आएँ। अन्य कोई भाव आए तो ऐसा कहा जाएगा कि मॉरेलिटी टूट गई।

जिनसे शादी की उन्हें रहो सिन्सियर

यह तो, और कोई चारा नहीं हो तो शादी करना, ऐसा कहा है और शादी करो तो एक पत्नीव्रत का पालन करना, कहा है। एक पत्नीव्रत का पालन कर रहा हो और यह दूषमकाल होने के बावजूद भी यदि अन्यत्र दृष्टि नहीं बिगड़े तो उसे ब्रह्मचर्य कहा है।

प्रश्नकर्ता : मान लीजिए कि दो वाइफ हों तो उसे किस दृष्टि से खराब कहा जाएगा?

दादाश्री : लाओ न दो वाइफ, शादियाँ करने में हर्ज नहीं है। पाँच शादियाँ करो तो भी हर्ज नहीं है लेकिन अन्य स्त्री जा रही हो और उस पर दृष्टि बिगाड़े तो वह गलत कहा जाएगा। कुछ नीति-नियम तो होने चाहिए न?

प्रश्नकर्ता : मेरे पास कोई प्रिन्सिपल्स (सिद्धांत) नहीं है।

दादाश्री : तो क्या जानवर जैसा रखने की ज़रूरत है? जानवर की तरह रखें तो सब छूट ही होती है। आपको जैसा अनुकूल आए वैसा करना। इन मनुष्यों ने, उनके मानवधर्म की रक्षा हो इसलिए यह व्यवस्था की है। वर्ना जानवर ही माना जाएगा न फिर तो! फिर वह जानवर में ही माना जाएगा न? क्योंकि जैसे किसी की बहन-बेटी है, वैसे ही अपनी भी बहन-बेटी होती हैं तो हमें सेफ साइड रखनी चाहिए न? जैसी अपनी बहन-बेटी वैसी ही किसी और की बहन-बेटी।

फिर से शादी करने में आपत्ति नहीं है।

मुसलमानों में एक नियम बनाया गया है 'चार तक की तुम्हें छूट है' लेकिन बाहर दृष्टि नहीं बिगड़नी चाहिए। बाहर किसी को नहीं छेड़ना चाहिए। यदि आपको एक स्त्री से संतोष नहीं है तो दो रखो। लेकिन पहली पत्नी को दुःख नहीं होना चाहिए।

दृष्टि बिगड़े वहाँ खत्म मॉरेलिटी

प्रश्नकर्ता : कुदरती रूप से उस स्त्री को तो दुःख होगा ही।

दादाश्री : किसी को दुःख हो, ऐसा वर्तन नहीं होना चाहिए और उसमें भी, खुद की स्त्री को दुःख नहीं हो ऐसा पहले से ही देखना चाहिए। क्योंकि आप उसे विश्वास दिलाकर लाए थे। आप शादी से बँधे हैं। प्रोमिस (वचन) दिया है। प्रोमिस देने के बाद फिर यदि उसे दग़ा देंगे तो फिर हम हिन्दुस्तान की आर्य प्रजा नहीं कहलाएँगे लेकिन अनाड़ी तो कहलाएँगे!

प्रश्नकर्ता : तो चार पत्नीयाँ क्यों लाते हैं?

दादाश्री : मुसलमानों के कुरान में ऐसा लिखा है, कुरान का नियम है कि मुसलमान शराब नहीं पीता। शराब का छींटा भी यदि बदन पर पड़ जाए तो उतनी जगह काट देता है, सच्चा मुसलमान ऐसा होता है। सच्चा मुसलमान कैसा होता है कि किसी स्त्री पर दृष्टि नहीं बिगाड़े और ज़रूरत पड़े तो दूसरी शादी कर ले, तीसरी कर ले, चार भी कर ले लेकिन दृष्टि नहीं बिगाड़ेगा। कितना अच्छा कानून है उनका! लेकिन अब क्या करें? लोग ही ऐसे हो गए हैं इसलिए जहाँ-तहाँ दृष्टि बिगाड़ते हैं।

प्रश्नकर्ता : चार पत्नीयाँ लाने पर दृष्टि सुधर जाएगी, इसका कोई विश्वास है क्या?

दादाश्री : नहीं, वे क्या कहना चाहते हैं कि, 'तू दृष्टि मत बिगाड़ना। तू चाहे चार पत्नीयाँ रख।' तब फिर वह खुद तय करता है कि, 'मुझे इतने में ही रहना है।' और यहाँ तो उसने तय कर लिया कि, 'एक ही है न मेरी!' यानी बाहर अन्यत्र दृष्टि बिगाड़ने कि छूट मिल गई उसे! बाहर दृष्टि बिगाड़ने से क्या होता है कि उसमें कुछ कार्य नहीं होता है लेकिन दृष्टि बिगड़ने से बीज डलता है और उस बीज में से वृक्ष बनता है। हमने इन सभी से कह दिया है कि आपकी दृष्टि बिगड़े तो आप प्रतिक्रमण करना तो फिर आपको बीज नहीं डलेगा। दृष्टि बिगड़ते ही प्रतिक्रमण करना।

भगवान ने क्या कहा है? तू भोगना लेकिन जो तेरे हक़ का है, उसे भोगना। *अणहक्क* का मत भोगना। यों ही *अणहक्क* के उपभोग की चेष्टा करने से तो अनंत जन्म बिगड़ जाएँगे। अब तेरी दृष्टि अन्य कहीं नहीं जाएगी न? कभी भी नहीं जाएगी न? इस काल में इसकी कीमत ज़्यादा आँकी गई है। कसौटी का काल है इसलिए दृष्टि भी नहीं बदलनी चाहिए। और यदि बदल जाए तो प्रतिक्रमण दिया हुआ है, उससे साफ कर देना।

अभी इस कलियुग के प्रभाव से हिन्दुस्तान की सिन्सियरिटी और मॉरेलिटी चली गई है। बिल्कुल भी सिन्सियरिटी नहीं है लेकिन समाज के कारण अच्छा है। समाज के दबाव के कारण, सभी घर में रहते हैं, वर्ना रहेंगे ही नहीं। ये स्त्रियाँ भी नहीं रहेगी और पुरुष भी नहीं रहेंगे। समाज का दबाव है इसलिए हमारे लिए अच्छा हो गया।

जहाँ कपट वहाँ सिन्सियरिटी खत्म

जहाँ मॉरल, वहाँ वक्रता नहीं होती। वहाँ

कपट नहीं होता। जहाँ मॉरेलिटी और सिन्सियरिटी है, वहाँ कपट का संपूर्ण रूप से अभाव होता है।

मैंने ऐसे भी पुरुष देखे हैं कि हमारे देखे हुए को भी गलत ठहरा देते हैं, जब कोई ऐसा झूठ बोले तब हमें क्या करना चाहिए? दावा दायर करना चाहिए? हमने खुद ने देखा हो फिर भी गलत ठहरा देते हैं! मैंने इसका पता लगाया था कि क्या यह जान-बूझकर झूठ बोल रहा है? नहीं, वह इस बात को भूल ही गया था।

प्रश्नकर्ता : क्या ऐसा है कि उसे ध्यान नहीं रहा?

दादाश्री : हाँ, लेकिन यदि वह बात स्त्रियों को पता हो फिर भी वे उल्टा बोलती हैं, कपट करती हैं। हाँ, पता होता है फिर भी झूठ बोलती हैं। पुरुष तो भूल जाते हैं इसलिए झूठ बोलते हैं। अब, यह भी एक तरह की इन्सिन्सियरिटी है। स्त्रियाँ जान-बूझकर झूठ बोलती हैं। यह तो इसलिए क्योंकि उनका हार्ट उतना मज़बूत है। पुरुष इस तरह से जान-बूझकर झूठ नहीं बोल पाते। पुरुषों का हृदय कमज़ोर होता है!

प्रश्नकर्ता : जान-बूझकर झूठ बोलने को क्या इन्सिन्सियरिटी माना जाएगा?

दादाश्री : तो क्या मानेंगे? और यह तो ज़्यादा, डबल इन्सिन्सियरिटी है!

यों तो पति, पत्नी के प्रति सिन्सियर रहता है और पत्नी पति के प्रति सिन्सियर रहती है लेकिन वास्तव में दोनों बिल्कुल भी सिन्सियर नहीं हैं। यह पहेली है, बड़ी पहेली!

कीमत मॉरल की है इसलिए संभालो मॉरल को

मॉरल की ही कीमत है। मॉरल में सब आ गया। आप अपनी दुनिया में मॉरल क्यों छोड़ देते हो? दुनिया आपकी है, मालिक आप हो। तब कोई कहता है, 'लोग तो छोड़ देते हैं न!' तो आपको क्या लोगों जैसा बनना है? सामान्य में रहना है या विशेष बनकर रहना है? दो तरह के लोग होते हैं : सामान्य और विशेष। यदि सामान्य में रहना हो तो लोगों जैसा करते रहना और यदि विशेष बनना है तो 'विथ मॉरल बाइन्डिंग' होना चाहिए।

कषायों की मंदता भी मॉरेलिटी है। अभी कुछ हद तक की मॉरेलिटी है लेकिन आगे जाकर जब संपूर्ण मॉरेलिटी आ जाएगी, तब मोक्ष होगा। अत: सिन्सियर और मॉरल, ये दो ही! गुरु के अधीन रहकर मॉरेलिटी रहे तो काम हो जाएगा।

एकनिष्ठता ही सच्ची भक्ति

सिन्सियरिटी और मॉरेलिटी दोनों साथ में रहें तब एकनिष्ठ बनेगा।

प्रश्नकर्ता : कृष्ण भगवान ने कहा हैं कि, 'मैं एकनिष्ठ भक्ति से प्रसन्न होता हूँ।' तो क्या भक्तियोग, योग से, ज्ञान से, धर्म से व स्वाध्याय से भी बढ़कर है?

दादाश्री : एकनिष्ठता को ही भक्ति कहते हैं। ये लोग जो भक्ति करते हैं वह एकनिष्ठता नहीं कहलाती। यदि एकनिष्ठता रहे तो भगवान आज भी तैयार हैं। लेकिन एकनिष्ठता हैं ही कहाँ? लोगों की निष्ठा का तो ठिकाना ही नहीं रहता। ऐसी एकनिष्ठता हो तो उसकी तो बात ही अलग है न!

प्रश्नकर्ता : लेकिन भक्ति में नि:स्वार्थ सेवा बाधा डालती है तो कौन सा पसंद करें।

दादाश्री : भक्ति और स्वार्थ-नि:स्वार्थ का कुछ लेना-देना नहीं है। भक्ति अर्थात् 'टू एप्रोच नियर एण्ड नियर टू गॉड (भगवान के नज़दीक

जाते)।' उसमें स्वार्थ-नि:स्वार्थ की बात ही कहाँ आई? ऐसा कुछ आया ही नहीं है न! सिर्फ अप्रोच (दृष्टिकोण) ही है। भक्ति यानी कौन सी भक्ति की बात कर रहे हो?

प्रश्नकर्ता : यदि कोई सेवा का काम आ जाए, कोई मुश्किल आ जाए तो भगवान की भक्ति छोड़कर जाना पड़ता है न!

दादाश्री : भगवान को उसमें हर्ज नहीं है। वापस फिर उसे भी छोड़कर आना पड़ेगा न? यहाँ छोड़कर जाते हैं, उसी तरह वहाँ से भी छोड़कर आना चाहिए। भगवान को उसमें कोई हर्ज नहीं है। वे क्या कहते हैं? 'तेरे लिए काम आया है, तो तू यह छोड़कर जा। उसमें दखल नहीं करना।'

यदि भगवान के प्रति सिन्सियर रहेंगे तो उन्हें बुरा नहीं लगेगा। हम यहाँ भक्ति करने बैठे हों और कोई व्यक्ति बुलाने आए कि 'चलिए न! मेरे यहाँ अभी के अभी। मेरे बेटे को दर्द है अस्पताल ले जाना है।' हमें भगवान से कहना है कि 'मेरे जाने का समय हो गया है, मैं जा रहा हूँ। आप दरवाज़ो बंद कर दीजिए,' हाँ, ताकि कोई घुस न जाए। तब फिर जाकर वापस आ जाना। फिर कहना, 'दरवाजा खोलिए' मैं जल्दी आ गया लेकिन सिन्सियर! अर्थात् 'बी सिन्सियर।'

ऑनेस्टी, सब से बड़ी भक्ति

प्रश्नकर्ता : यदि शरीर में दर्द हो तब भगवान की भक्ति नहीं हो सकती न?

दादाश्री : भगवान की भक्ति उतनी ही करना, जितनी हो सके उतनी लेकिन उससे भी ज़्यादा ज़रूरत है आपको ऑनेस्ट रहने की। ऑनेस्ट नहीं रहना है और दूसरी तरफ भगवान की भक्ति करनी है। उसके बजाय ऑनेस्ट रहो न! ऑनेस्टी जैसी उच्च प्रकार की और कोई भक्ति नहीं है भगवान की। ऑनेस्ट, सिन्सियर और मॉरल, इन तीन चीज़ों में सब आ गया। भगवान मजीरा बजाने के लिए नहीं कहते हैं, वे ऐसे नहीं हैं। आपमें कुछ तो ऑनेस्टी, सिन्सियरिटी और मॉरेलिटी होनी चाहिए। क्या यह हो नहीं सकता? आपको क्या लगता है।

प्रश्नकर्ता : हो सकता है दादा।

दादाश्री : वे कोई ऐसी मजीरा बजाने वाली भक्ति नहीं ढूँढते हैं। यह तो, उल्टा-सीधा करता है और सुबह भगवान की भक्ति करने बैठ जाता है। भगवान ऐसी भक्ति जमा नहीं करते हैं।

भक्ति करते हुए इतना संभाल लो

प्रश्नकर्ता : दादा, किसी के आत्मा को दु:ख नहीं हो, वह भक्ति ही कहलाएगी न?

दादाश्री : हाँ, यदि इतना संभाल लो तो बहुत अच्छा। इतना संभाल लो तो भी बहुत हो गया। वह मॉरेलिटी और सिन्सियरिटी कहलाती है।

प्रश्नकर्ता : आपने जो कहा वह तो मानते हैं कि 'ऑनेस्टी इज़ द बेस्ट भक्ति' (ईमानदारी श्रेष्ठ भक्ति है) लेकिन फिर हर रोज़ भगवान का नाम लेते समय मजीरा बजाने से मन को शांति मिलती है। वह तो अच्छी चीज़ है न?

दादाश्री : नहीं, लेकिन ऑनेस्टी नहीं रखने से मन बिगड़ गया है मन बिगड़ गया है इसलिए वह ऊधम मचता है। उससे अच्छा तो शुरू से ही ऑनेस्टी रखो न।

निष्काम भक्ति है कल्याणकारी

प्रश्नकर्ता : दादा, क्या निष्काम कर्म का फल मिलता है?

दादाश्री : निष्काम का अर्थ क्या है? सही नीयत वाला। निष्काम तो कोई व्यक्ति रह ही नहीं सकता। जब तक ज्ञान प्राप्त नहीं हो जाता, तब तक निष्काम नहीं बन सकता लेकिन सही नीयत ही सिन्सियरिटी भाव है, निश्चय भाव है और स्पृहा रहित।

प्रश्नकर्ता : लेकिन क्या स्पृहा रहित को निष्काम नहीं कहेंगे?

दादाश्री : निष्काम नहीं कहलाएगी। निष्काम तो बहुत बड़ा शब्द है लेकिन लोग इसे नीचे ले आए हैं। कृष्ण भगवान ने जिस निष्काम (निष-काम) भक्ति की बात बताई है न, वह बहुत बड़ा शब्द है। 'काम' में तो सब कुछ आ गया, काम में तो सभी अंश आ गए। 'काम' में क्रोध-मान-माया-लोभ सब कुछ आ जाता है, विषय वगैरह सभी कुछ। वह निष्काम तो बहुत बड़ी चीज़ है, लोग नीचे लाकर उपयोग करते हैं। उसे स्पृहा कहते हैं।

साफ नीयत से सभी काम होते हैं पूर्ण

प्रश्नकर्ता : साफ नीयत होने का क्या मतलब है क्या और साफ नीयत नहीं होने का क्या मतलब है?

दादाश्री : अगर इस दुनिया में साफ नीयत हो तो कोई काम श्रेय हुए बगैर रहेगा ही नहीं, काम पूरा होता है। साफ नीयत हो तो संसारी काम पूर्ण होते हैं और अध्यात्म के काम भी पूर्ण होते हैं। साफ नीयत अर्थात् क्लियर रेलवे लाइन! और नीयत साफ नहीं हो तो उसका ठिकाना ही नहीं रहता। उसकी गाड़ी कौन से गाँव जाएगी, वह कहा ही नहीं जा सकता! नीयत साफ नहीं हो तो बरकत ही नहीं आती है।

साफ नीयत यानी कल्प्लीट मॉरेलिटी सहित सिन्सियरिटी। उसकी बात ही अलग है न! अगर नीयत साफ है तो इस दुनिया में कोई भी चीज़ मुश्किल नहीं है।

प्रश्नकर्ता : कुछ काम तो हमें फोर्स से करने पड़ते हैं तो उसमें किस तरह सिन्सियर रह सकते हैं? कुछ काम हमें फोर्स से, किसी के ज़बरदस्ती करने पर करने पड़ते हैं...

दादाश्री : तो सिन्सियर हुए बगैर नहीं होगा।

प्रश्नकर्ता : सिन्सियर रहना पड़ेगा?

दादाश्री : रहना ही चाहिए।

प्रश्नकर्ता : जो कुछ भी करें उसमें सिन्सियर रहना चाहिए फिर चाहे किसी का आग्रह हो।

दादाश्री : कुछ भी हो न लेकिन हमें सिन्सियर रहना है। इन्सिन्सियरली भी करना तो पड़ता ही है न? तो सिन्सियरली क्यों न करें?

प्रश्नकर्ता : हम सिन्सियरली कर रहे हैं या नहीं, वह कैसे पता चलेगा? हमें लगता है कि हम सिन्सियर ही हैं, सामने वाले को नहीं लगता।

दादाश्री : नहीं। आपकी नीयत साफ हो तो सिन्सियरली करो न, क्या परेशानी है? ऐसा नहीं कि जब साहब आएँ उस समय काम करने लगें और न आएँ तब वापस उल्टा चलें, ऐसा नहीं। किसी को खुश करने के लिए नहीं।

इन दो शब्दों से ही खुद रह सकता है रक्षित

हमें सभी काम सच्चे दिल से और सिन्सियरली करते रहना फिर यदि ईश्वर ऊपर से आ जाए न, तब भी उनका डर मत रखना।

सिन्सियर और मॉरल वाले को खुद का

रक्षा नहीं करना पड़ता। हर एक जन्म में ये दो शब्द ही रक्षा करते हैं! सिन्सियर रहने से किसी भी प्रकार का भय नहीं रहेगा। सिन्सियर रहने से यदि संसार में किसी भी प्रकार का भय नहीं रहे तो उसका मोक्ष हो जाएगा।

रहो सिन्सियर मालिक के प्रति

मैंने मिल में एक सेक्रेटरी से पूछा, 'सेठ कहाँ गए हैं?' तब कहने लगा, 'साहब एक बार मेरी विनती सुन लिजिए।' मैंने कहा, 'क्या कहना है?' तब कहने लगा, 'आप सेठ कहते हैं, वह ठीक है लेकिन (सेठ में से) मात्रा निकाल देने जैसा है।' मैंने कहा 'ऐसा नहीं बोलना चाहिए। भाई, जब तक तू उस सेठ से तनख्वाह ले रहा है तब तक ऐसा नहीं बोलना चाहिए।' जब तक हम किसी से तनख्वाह लेते हैं, तब तक उनके बारे में ऐसा कैसे कह सकते हैं? छोड़ने के बाद तुझे जो ठीक लगे, वह बोलना लेकिन अभी तू उनसे तनख्वाह ले रहा है। हममें सिन्सियरिटी तो होनी चाहिए न? अभी जिसकी चाय पी रहें हैं, उसके लिए ज़रा सा भी भाव क्यों बिगाड़ें? लेकिन यह तो सिन्सियर भी नहीं है बिल्कुल भी। इसलिए मैंने कहा कि ऐसा नहीं बोलना चाहिए, भले ही सेठ में से 'सठ' हो गए हो।

सिन्सियरिटी के अभाव से उत्पन्न होता है दुःख

यदि मनुष्यों ने मॉरेलिटी बेच नहीं दी होती न तो कोई दुःख नहीं रहता। यह तो मॉरेलिटी ही बेच दी है, सिन्सियरिटी ही बेच दी है। उसी कारण ये सब दुःख हैं।

सिन्सियरिटी और मॉरेलिटी से यहाँ कोई दुःख ही नहीं रहेगा लेकिन यहाँ पर दुःख है इसीलिए लोग भगवान को ढूँढते हैं, वर्ना, इन कल्पित सुखों में ही डूबे रहते। इनमें सुख है ही नहीं। सच्चा सुख तो है ही नहीं किसी जगह पर, कल्पित सुख है लेकिन कल्पित सुख भी दुःख रहित होता तो अच्छा था। दिनभर में यदि दुःख नहीं आए तो बहुत हो गया लेकिन दुःख आए बगैर रहता नहीं है क्योंकि लोग गलत बोलते हैं। रास्ते पर जाते हुए पैर को ठोकर लग जाती है, ऐसा आपने देखा है या नहीं? ठोकर लगती है या नहीं? पैर को ठोकर लगे तो लोग क्या कहते हैं? 'मुझे ठोकर लगी।' अब, सच्चा न्याय क्या है? आप ठोकर से टकराए हो क्योंकि ठोकर तो उसी जगह पर ही थी। आप उससे टकराए! जबकि लोग उल्टा कहते हैं न! ऐसा नहीं कहते कि, 'मैं ठोकर से टकराया।' अब, इस तरह इन्सिन्सियर हैं और इसीलिए इतने दुःख है। भयंकर दुःखों से प्रजा दुःखी हो रही है। कुछ तो समझना पड़ेगा न?

सिन्सियरिटी का फल सुख ही मिलता है। सिन्सियरिटी नहीं रहती है उसी का दुःख है।

मॉरल, कितना डाउन गया!

सिन्सियरिटी और मॉरेलिटी इस हद तक डाउन हो गई है कि यदि यह मामा की पोल के सामने जो गेट (दरवाज़ा) है न, यदि उस गेट को हटा दें न तो संडास के सामने रखा हुआ लोटा भी न रहे। अगर पीतल का लोटा रखा हो तो लोटा नहीं रहेगा। इस गेट के कारण कुछ बचा हुआ है। मेरा कहना है कि इतनी उच्च जाति, उच्च विचार और संस्कार कैसे! लेकिन उनमें भी अभी ऐसा हो गया है।

हमारे देश में अगर 'गेट' हटा दिए जाएँ तो क्या होगा? अरे, सुखाए हुए कपड़े भी ले जाएँगे क्योंकि आज ऊँच-नीच, सभी लोगों का दिमाग ही बिगड़ गए हैं। 'मैं ऐसा हूँ, जैन हूँ या वैष्णव हूँ', ऐसा कुछ रहा ही नहीं। मन ही बिगड़

जाए, ऐसा है। सिर्फ गेट के कारण ही उन्हें भय लगता है इसलिए भय के कारण सीधे रहते हैं।

कीमत किसकी? द्रव्य की या मॉरल की?

ऐसे कितने लोग हैं जो हाथ आया काला धन छोड़ देंगे? क्या ऐसे लाखों लोग हैं?

प्रश्नकर्ता : शायद ही कोई छोड़ेगा।

दादाश्री : बहुत कम लोग हैं! यदि एक मकान में सोने की गिन्नियाँ पड़ी हों, जिनका ध्यान रखने को कोई न हो और वहाँ से सिर्फ देखकर वापस आना हो तो कितने लोग मुठ्ठी में लेकर नहीं आएँगे? देखो न, हमारा मॉरल तो देखो! कितना डाउन हो गया है! अरे, सोने की गिन्नियों के लिए तेरा मन बिगड़ा? क्या तुझे पता है कि तेरा मन किस गिन्नी का है? वह सोने की नहीं है, अचिंत्य धातु से बनी है। जबकि इस सोने के लिए मन बिगाड़ा तूने? हाँ, लेकिन वहाँ कोई संभालने वाला या डाँटने वाला नहीं था और कोई शिकायत करने वाला भी नहीं था। इसलिए सोचता है, 'चलो, ये ले लें'। अरे, उसका कुछ परिणाम तो आएगा या नहीं? प्रत्येक चीज़ का कुछ परिणाम तो होगा या नहीं? यहाँ कोई संभालने वाला नहीं है लेकिन अन्य कोई बाप तो होगा न? यह क्या यों ही है गप्प? गप्प है क्या? एक तिनका भी नहीं लेना चाहिए हमें! *अणहक्क* का कुछ भी नहीं लेना चाहिए। मन तो सोने से भी कितनी कीमती धातु है? अचिंत्य धातु! लोगों को मॉरेलिटी की कोई कीमत नहीं रही।

जितना इम्मॉरल, उतनी इन्फिरियारिटी

यह मॉरल क्यों इतना नीचे गिर गया है? लोगों का देखकर! 'ये बड़े वकील हैं वे ऐसे करते हैं तो हमें करने में क्या हर्ज़ है? ये बड़े लोग ऐसा करते हैं तो मुझ कलेक्टर को क्या हर्ज़ हैं?' बड़े लोग करते हैं तब फिर कलेक्टर करेंगे या नहीं?

प्रश्नकर्ता : देखा-देखी से करते हैं न!

दादाश्री : और लोग समझते हैं कि ये बड़े आदमी हैं! अरे, हो सकता है क्या वह बड़ा आदमी? जिसमें मॉरल नहीं है उसे 'बड़ा' कैसे कह सकते हैं? लोग भले ही व्यवहार से कहें लेकिन तुम क्यों उसे बड़ा मानता है? व्यवहार में भले ही कहे जाते हैं लेकिन खुद को ऐसा नहीं मानना क्या हमारे खुद के अधिकार में नहीं है? क्यों कुछ कह नहीं रहे?

प्रश्नकर्ता : हाँ! सही बात है।

दादाश्री : मॉरल तो होना चाहिए न! मॉरल के बिना इंसान ही कैसे कहलाएगा?

प्रश्नकर्ता : लेकिन लोगों को मॉरल जैसा कुछ पता ही कहाँ है?

दादाश्री : हाँ, इसीलिए हमारे लिए उनकी कीमत नहीं है न! वैसे तो बड़ा आदमी कहते हैं लेकिन यदि मॉरल न हो तो हमारे लिए उसकी 'वैल्यू' नहीं है। अत: उसे देखकर हमें 'इन्फिरियारिटी कॉम्प्लेक्स' नहीं होता। वह 'इन्फिरियर' है, तू तो 'सुपिरियर' है, तू मॉरल वाला है इसलिए तुझे देखते ही उसे घबराहट होगी। यह तो दुनिया का नियम है। अत: मॉरलिटी की कीमत बढ़ानी है और जितना हो सके उतना लोगों को मॉरल की तरफ ले जाना चाहिए। उदाहरण भी मॉरल का देना चाहिए। बेकार ही 'इन्फिरियर' क्यों बनता है? 'बड़े आदमी, बड़े आदमी' करता है! अरे, उसका मॉरल तो देख आ तू और तेरा मॉरल देख। तेरा मॉरल बड़ा है या उसका? अत:

मॉरल देखो। तुझे क्या पसंद है, मॉरल या ऐसा ही? या बड़ा आदमी पसंद है?

जितनी इम्मॉरेलिटी उतनी इन्फिरियारटिी

एक व्यक्ति ने मुझसे पूछा, 'दादा, क्या आपको इन्फिरियर कॉम्प्लेक्स नहीं रहता?' मैंने कहा, 'पूरे वर्ल्ड में किसी से भी नहीं रहता। मैं मॉरल हूँ, संपूर्ण रूप से मॉरल हूँ। भगवान भी कह उठेंगे कि ऐसे काल में ऐसी मॉरेलिटी कैसे रह सकती है! मैं ऐसा मॉरल हूँ फिर 'इन्फिरियारिटी कॉम्प्लेक्स' कैसे आए?

'इन्फिरियारिटी कॉम्प्लेक्स' का मतलब क्या है? 'इम्मॉरेलिटी!' जितनी इम्मॉरालिटी उतनी इन्फिरियारिटी। उसके आने से पहले ही प्रभावित हो जाता है। मॉरल के बिना क्या मोक्ष में जा सकते हैं?! क्या मॉरल के बिना मोक्ष में जा सकते हैं?

प्रश्नकर्ता : नहीं जा सकते। लेकिन जो लोग मोक्ष को नहीं मानते, उनका क्या?

दादाश्री : वे लोग मानते ही नहीं न! मोक्ष को तो मानते ही नहीं हैं न!

मॉरल प्रकाशित होता है सौम्यता व प्रताप जैसे गुणों से

सारी मॉरेलिटी बेच दी है, लोगों ने। मॉरल व्यक्ति तो कैसा होता है? उसे देखते ही हमें ताप लगता है। कईं लोग ऐसे होते हैं कि ऐसा ही जिनका आपको ताप लगता है। उनके सामने बोलने की हिंमत नहीं होती।

प्रश्नकर्ता : प्रभाव, प्रभाव!

दादाश्री : प्रताप कहलाता है, प्रभाव नहीं।

प्रश्नकर्ता : प्रताप! हाँ प्रताप।

दादाश्री : प्रताप! हिन्दुस्तान में तो ऐसे प्रताप वाले तो बहुत हैं लेकिन एक तरफ प्रताप और दूसरी तरफ सौम्य हो, इंसान में ये दोनों गुण एक साथ नहीं हो सकते। सौम्यता चंद्र का गुण है और प्रताप, सूर्य का गुण है। विरोधाभासी होने के कारण दोनों गुण साथ में नहीं रहते। लेकिन ये दोनों गुण ज्ञानी में एक साथ ही होते हैं एट-ए-टाइम। एट-ए-टाइम सौम्यता भी उतनी होती है और प्रताप भी उतना ही होता है और अगर व्यवहार में सौम्यता वाला महात्मा हो तो वह सौम्य ही होता है, प्रतापी नहीं। यदि निर्लज्ज (नालायक) इंसान बैठ जाए तो उसे उनका ताप-वाप नहीं लगेगा। यहाँ तो निर्लज्ज इंसान आ ही नहीं सकता। वह सीढ़ियाँ चढ़कर वापस उतर जाता है। मैं तो सब से कहता हूँ कि वह आ रहा है लेकिन वापस चला जाएगा है क्योंकि उसे ताप लगता है।

सिन्सियरिटी-मॉरेलिटी प्रगटाएँ शील

मॉरेलिटी और सिन्सियरिटी दोनों को इकट्ठे हों, तब शील उत्पन्न हुआ कहलाता है।

प्रश्नकर्ता : शील क्या है?

दादाश्री : शील में तो सभी चीज़ें आ जाती हैं। कोई चीज़ बाकी नहीं रहती। मुख्य रूप से हम शील किसे कहते हैं? फर्स्ट, 'स्त्री' से संबंधित चारित्र को शीलवान कहते हैं और वास्तव में तो मॉरेलिटी व सिन्सियरिटी सब होना चाहिए।

प्रश्नकर्ता : मुझे ऐसा लगता था कि शील अर्थात् सदाचार।

दादाश्री : नहीं। सदाचार और शीलवान दोनों अलग-अलग चीज़ें हैं। सदाचार तो सामान्य चीज़ है। यदि शीलवान रात के अंधेरे में साँप से

भरे हुए कमेरे में आए तो उसे साँप छुएँगे तक नहीं। सभी साँप एक दूसरे पर चढ़ जाएँगे लेकिन उसे नहीं छूएँगे। शीलवान का इतना ताप लगता है। दुर्जनों को ताप लगे व सज्जनों को शांति लगे, वह शीलवान है।

प्रश्नकर्ता : शील में 'इगोइज़म' रहता है क्या? क्या शील 'इगोइज़म' से प्राप्त किया जा सकता है?

दादाश्री : इगोइज़म तो इसका बैरी है लेकिन फिर भी शील की शुरुआत 'इगोइज़म' से होती है। जैसे-जैसे शीलवान बनता जाता है वैसे-वैसे 'इगोइज़म' 'डल' होता जाता है। फिर 'इगोइज़म' खत्म हो जाता है। उसके बाद शीलवानपन प्रकट होता है। क्रमानुसार यह सब होता जाता है।

प्रश्नकर्ता : तो क्या शील अभ्यास से बढ़ने वाली चीज़ है?

दादाश्री : शील जानने की चीज़ है। शील में क्या-क्या आता है? क्या होना चाहिए तो शील कहलाएगा? जैसे कि कढ़ी वह कोई एक चीज़ नहीं है, सभी चीज़ों का सम्मिश्रण है। उसी तरह यह शील कोई चीज़ नहीं है, सम्मिश्रण है। हर एक गुण इसमें आ जाना चाहिए। अंग्रेजी में तो दो शब्द कह देता हूँ कि मॉरेलिटी और सिन्सियरिटी इसमें सब आ जाता है।

प्रश्नकर्ता : यह ठीक है। मतलब यह शील वह अभ्यास का विषय है?

दादाश्री : अभ्यास से बहुत हुआ तो 'सी.ए.' बन सकता है, शीलवान नहीं। जिनमें ये सिन्सियरिटी और मॉरेलिटी गुण दिखाई दें, उनके संग में व संसर्ग में बैठने से यह शील उत्पन्न हो जाता है।

सभी गुण समाएँ हैं शील में

प्रश्नकर्ता : जिसे आपने शील कहा है, उसमें मॉरेलिटी व सिन्सियरिटी के अलावा अन्य गुण भी होने चाहिए?

दादाजी : शील तो बहुत बड़ी चीज़ है। ये मॉरेलिटी व सिन्सियरिटी तो शील में समा जाते हैं लेकिन शील में मॉरेलिटी व सिन्सियरिटी नहीं समा सकते। जैसे बड़े बर्तन में छोटा बर्तन समा जाता है लेकिन मॉरेलिटी और सिन्सियररिटी का हेतु शील है। बाकी इससे इंसान समझ सकता है कि शील में क्या-क्या आ गया!

शीलवान में मॉरेलिटी सिन्सयरिटी, ब्रह्मचर्य आदि सब होते हैं। ऐसे शीलवान को स्त्री का विचार तक नहीं आता। उनमें साहजिक नम्रता होती है। साहजिक मतलब नम्रता लानी नहीं पड़ती, सहज रूप से सामने वाले के साथ नम्र रहकर ही बात करते हैं। फिर, सहज सरलता होती है, सरलता लानी नहीं पड़ती। जैसे मोड़ना चाहें वैसे मुड़ जाते हैं। उनका संतोष साहजिक होता है। इतने से चावल और कढ़ी दी जाए तो वे आँख उठाकर माँगते नहीं हैं। साहजिक संतोष! उनकी क्षमा भी साहजिक होती है। उनके अपरिग्रह व परिग्रह दोनों साहजिक होते हैं।

'ज्ञानी' की दृष्टि से सभी प्योर

प्रश्नकर्ता : आपको सभी प्योर ही दिखाई देते हैं। वह क्या इसलिए कि आपकी दृष्टि ही ऐसी है?

दादाश्री : सभी साफ ही हैं न। क्या सब मैले हैं?

प्रश्नकर्ता : नहीं, लेकिन आप स्पष्ट रूप से कहते हैं, स्पेसिफिकली कहते हैं कि, 'यह व्यक्ति साफ ही है।'

दादाश्री : तो यदि इसे साफ कहूँगा तो फिर मुझे इसे मैला भी कहना पड़ेगा फिर मुझे राग-द्वेष रहेंगे। इसलिए हम सामान्य भाव से ही रहते हैं।

प्रश्नकर्ता : नहीं, लेकिन क्या आप अभी नहीं कह रहे थे कि 'नगीन भाई बहुत साफ इंसान हैं।' इतना क्यों स्पेसिफिक कहते हैं?

दादाश्री : वह तो हमें साधारण तौर पर समझाने के लिए कहते हैं। अपवाद की तरह उदाहरण देते हैं। बाकी हम यह सब कॉमन भाव से ही देखते हैं।

प्रश्नकर्ता : लेकिन यह किस व्यू पोइन्ट से साफ हैं? आपका व्यू पोइन्ट क्या है, साफ मतलब?

दादाश्री : साफ यानी मॉरल एन्ड सिन्सियर। जहाँ सिन्सियरिटी नहीं है, वहाँ क्या है? और जहाँ मॉरेलिटी नहीं है, वहाँ कुछ भी नहीं है।

प्रश्नकर्ता : एक वाक्य है 'लॉस ऑफ सिन्सियरिटी इज़ लॉस ऑफ पावर'। (सिन्सियारिटी की कमी यानी शक्ति की कमी)

दादाश्री : हाँ, लॉस ऑफ सिन्सियरिटी, वह लॉस ऑफ पावर है। सिन्सियरिटी ही पावर है।

रखो ऑब्लाइजिंग नेचर और प्रमाणिकता

प्रश्नकर्ता : सभी को खुशियाँ किस तरह से दे सकते हैं? सब के मन का समाधान किस तरह से कर सकते हैं?

दादाश्री : ऑब्लाइजिंग (परोपकारी) नेचर और ईमानदारी रखना है, रख पाओगे?

प्रश्नकर्ता : हाँ!

दादाश्री : और इन दोनों को कपड़े पहनाने होंगे न। ऑब्लाइजिंग नेचर और ईमानदारी को सिन्सियरिटी और मॉरेलिटी के कपड़े पहनाने होंगे। यदि इतना करोगे तो आपका सब सफल! यानी सिन्सियरिटी और मॉरेलिटी टॉप मोस्ट नहीं, आपको जितनी अनुकुल हो, आपकी जितनी शक्ति हो उतनी। टॉप मोस्ट शब्द मैं कह ही नहीं सकता। यदि टॉप मोस्ट हुआ तो भगवान बन जाएगा। आपका प्रश्न अच्छा है इसलिए आपसे यह बात की। यदि वह ठीक लगे तो करना, वर्ना आप मुझसे कह देना कि 'साहब, मुझसे नहीं हो पा रहा है। आप कर दीजिए।'

दो तरह की अक्ल होती हैं: व्यभिचारिणी और अव्यभिचारिणी। यदि अव्यभिचारिणी होगी तो उस अक्ल से तू सुखी रहेगा। फिर पूछता है, 'वह कहाँ से लाएँ?' मैंने कहा, 'वह लानी नहीं है। ऑब्लाइजिंग नेचर और ईमानदारी का पालन करके, उसे सिन्सियरिटी और मॉरेलिटी के कपड़े पहना देना।'

प्रश्नकर्ता : फिर आप कहते हैं न, कि ड्रामेटिक रखना?

दादाश्री : हाँ, इतना करोगे तो आपकी सब को खुश करने की इच्छा पूरी हो जाएगी। तो चित्त प्रसन्नता उत्पन्न होगी, वर्ना कैसे हो पाएगी? जबकि यह तो व्यभिचारिणी बुद्धि ही है न? स्वार्थी ही है न? लोग दिनभर स्वार्थ के लिए ही घूमते हैं।

प्रश्नकर्ता : हाँ, स्वार्थ के लिए ही घूमते हैं।

दादाश्री : क्या ये सभी जज कोर्ट में परमार्थ के लिए जाते होंगे? पूरे दिन स्वार्थ के लिए ही? थोड़े बहुत लोग ही होंगे सौ में से कुछ ही।

प्रश्नकर्ता : बहुत कम। बाकी, सभी अपने-अपने स्वार्थ में हैं।

दादाश्री : हाँ, औरों के लिए जीने वाले कितने होंगे?

मॉरल यानी हर जगह सिन्सियर

मॉरेलिटी सभी के प्रति रहती है लेकिन सिन्सियरिटी तो कुछ ही लोगों के प्रति रहती है। जितने लोगों के प्रति सिन्सियर रहता है, उनके प्रति ही सिन्सियर, बाकी सब के प्रति इन्सिन्सियर रहता है। जबकि मॉरल यानी मॉरल! मॉरल की तो बहुत कीमत है। मॉरल में सिन्सियरिटी तो है ही लेकिन पूरी दुनिया के प्रति सिन्सियर रहना, वह होल (पूर्णता) है। मॉरेलिटी अर्थात् कोई दुर्गुण भी ही नहीं इसलिए पूरी दुनिया के प्रति सिन्सियर ही कहा जाएगा न! मॉरेलिटी मतलब सिन्सियर तो आप पाँच-पचास लोगों के प्रति रहते हो और बाकी के साथ नहीं रहते। पति, पत्नी के प्रति सिन्सियर रहता है और दूसरों के साथ झगड़ा करता है लेकिन फिर भी सिन्सियर तो कहलाएगा ही न! नहीं कहलाएगा? सिन्सियर मतलब सिन्सियर। आपको समझ आया?

प्रश्नकर्ता : हाँ, दादा।

दादाश्री : और मॉरल अर्थात् तो एवरीव्हेर उसके लिए पूछने की ज़रूरत ही नहीं रहती न! पहले सिन्सियर बनेगा तब मॉरल बन सकेगा। और यदि सिन्सियर नहीं है तो वह मॉरल कैसे बन सकेगा? सच्चे दिल से ज़रा भी एक्सेप्ट करे तो वह मॉरल कहलाएगा। समझ में आया आपको? आपको क्या अच्छा लगता है? मॉरल या सिन्सियर? बोलो न, क्या कहते हो?

प्रश्नकर्ता : मॉरल।

दादाश्री : मॉरल, हाँ!

गुणों में कीमती गुण है मॉरल

यदि सिन्सियर कम रहे तो चलेगा लेकिन मॉरल तो होना चाहिए ही न! कोई व्यक्ति पूरी दुनिया के साथ इन्सिन्सियर रहे लेकिन अगर वह अपनी पत्नी के साथ कम्प्लीट (संपूर्ण) सिन्सियर रहे फिर भी वह सिन्सियर ही कहलाएगा। अत: सिन्सियर गुण ऐसा है कि वह ब्रेकेबल (टूट जाए ऐसा) है और यह मॉरल तो हर तरफ से बाउन्ड (पक्का) है। इसमें तो चलेगा ही नहीं। मॉरल अर्थात् मॉरल।

प्रश्नकर्ता : दादा, यह समझ में नहीं आया, फिर से समझाइए न।

दादाश्री : मॉरल यानी मॉरल। जैसे स्टोन्स (नगीनों) में प्रेशियस (कीमती) स्टोन होते हैं न, उसी तरह गुणों में प्रेशियस गुण, यह मॉरल है। अत: सिन्सियरिटी ब्रेकेबल है जबकि यह मॉरल तो अनब्रेकेबल है। कम्प्लीट मॉरल तो वह भगवान बन जाता है। इस तरह मॉरेलिटी सभी जगह है। अत: मॉरल तरफ जाने की दृष्टि रखनी है।

बुद्धि नहीं बनने देती मॉरल

यह बुद्धि मॉरल नहीं होने देती है। यदि बुद्धि गई तो मॉरल बन ही जाएगा।

प्रश्नकर्ता : बुद्धि किस तरह दखल करती है इसमें, मॉरेलिटी में?

दादाश्री : वह जहाँ पर फायदा दिखाए वहाँ जाते हो न? फायदा है नहीं लेकिन दिखाती है फायदा। यानी उसे ऐसा सब आता है।

यह किसी से निकाली नहीं जा सकती। यह कुंद बुद्धि है या धारवाली? धारवाली बुद्धि खुद जो कुछ भी उल्टा किया हो, कैसे भी

करके (उल्ट-पुल्टकर) उसका समाधान ला देती है जबकि ये कुंद बुद्धि वाले पूरी रात उसी में उलझते रहते हैं।

सच्ची बुद्धि तो हमें खुद को बताती है कि 'यह भूल हो रही है' और यह उल्टी बुद्धि बिना काम के पूरी रात भटकाती ही रहती है। उसे 'बंदर बुद्धि' कहते हैं। पूरी रात जागता है और सुबह कुछ भी नहीं। जो रातभर जगाए, उसे बुद्धि नहीं कहेंगे। हमें बुद्धि की धार लगती है। उपयोग शुरू होते ही हमें समझ में आ जाता है कि यह तो बेकार ही समय जा रहा है। फिर से यह क्या परेशानी? मुझे तो अंदर से चीर जाती है। अरे! मेरी (बुद्धि) तो ऐसी धारवाली थी। छूते ही खून निकल आता था।

तेरी कुंद है या कैसी?

प्रश्नकर्ता : अभी तो कुंद है, दादा।

दादाश्री : कभी खून भी निकल जाता है क्या?

प्रश्नकर्ता : कभी कभी निकल जाता है। हाँ, दादा। अब इस कुंद बुद्धि को धारवाली कैसे बनाएँ?

दादाश्री : जिसमें खूब ऑनेस्टी और मॉरेलिटी हो, उसकी बुद्धि बहुत सुंदर होती है। यह बुद्धि तो, इस संसार के दु:खों को खत्म कर दे, ऐसी होती है। ज्ञानी के ज्ञान जैसी। जबकि अभी की यह बुद्धि तो बल्कि दु:ख देती है और फायदा कुछ भी नहीं करवाती। उसे फूलिश (मूर्ख) की बुद्धि कहते हैं। फूलिश में भी बुद्धि तो होती है या नहीं? वह फूल्स पेरडाइज़ (भ्रामक सुख) में रहती है।

बुद्धि तो बहुत उपकारी चीज़ है लेकिन बुद्धि धारवाली होनी चाहिए। शार्प एज्ड (तीक्ष्ण धारवाली) होनी चाहिए। बुद्धि तो देर तक चलती रहती है न, हमें बुद्धू बनाती है। बाद में सोना तो पड़ता है न? जवाब नहीं मिलता, एक भी अंक मेल नहीं खाता। फिर थककर सो जाना पड़ता है, इसका क्या अर्थ है? उसे बुद्धि कैसे कहेंगे? वह तो बस अपने मन में मानते हैं, उतना ही। बुद्धि तो कैसी होनी चाहिए? जो आरपार निकल जाए।

तीक्ष्ण बुद्धि मिटाती है मतभेद

बुद्धि से ही यह सारा भोगते हैं फिर ओखली में डालकर कूटती रहती है। एक व्यक्ति ने मुझसे कहा कि, 'मेरी बुद्धि इतनी अच्छी है, व्यापार व संसार में बहुत अच्छा काम कर रही है लेकिन यह बुद्धि मुझे परेशान क्यों करती है? मैंने कहा, 'कूट रही है?' कहता है 'हाँ, हाँ।' तब मैंने कहा, 'अरे! यही फूलिश बुद्धि है।' इसे तू सही क्यों मान बैठा है? इसे तो रखना ही मत। यह है फूलिश की बुद्धि! फूलिश भी बुद्धिशाली तो होता ही है न? ऐसा तो नहीं हो सकता न फूलिश बुद्धिशाली न हो?

प्रश्नकर्ता : उसका उपयोग गलत जगह पर हो गया...?

दादाश्री : नहीं, सच्ची बुद्धि तो, वह तीक्ष्ण धारवाली बुद्धि है न, वह तो घर के सभी क्लेश खत्म कर देती है, मतभेद का निवारण लाती है।

प्रश्नकर्ता : हाँ, तीक्ष्ण बुद्धि मतलब सच्ची?

दादाश्री : हाँ, तीक्ष्ण धारवाली। बाकी सब मतभेद वगैरह सब वृत्तियाँ तो फूलिश के हैं। वह है ही न!

अब तेरे मतभेदों का निवारण हो जाता है न?

प्रश्नकर्ता : आज बहुत बड़ी बात हुई, दादा। दो बातें समझ में आईं कि दूसरों की भूलें निकालने के बारे में आपने जो बात बताई, वह तो लोगों को पता होता है लेकिन फिर भी लोग भूलें निकालते हैं, वह बहुत बड़ा गुनाह है।

दादाश्री : हाँ, जिस भूल को वह जानता हो उसे वह भूल बताने का अर्थ ही क्या है? अगर वह भूल नहीं जानता और उस भूल बताएँगे तो वह उपकार मानेगा। अब, घर में सारी झंझट इसी वजह से हैं न! 'अरे! यह कलमुंहा सभी जगह गाता ही रहता है। क्या मुझे नहीं पता कि कढ़ी खारी है?' यों ही गाता रहता है। ऐसा हो गया और वैसा हो गया।

प्रश्नकर्ता : और दूसरी बात यह है कि अपनी बुद्धि मॉरैलिटी पर चलानी है, प्रोफिट एण्ड लॉस पर नहीं। ये दो चीज़ें।

दादाश्री : हाँ, सही समझ गए।

प्रश्नकर्ता : अपने जो तीक्ष्ण बुद्धि की बात बताई न, कि जब मॉरैलिटी ज़्यादा होती है तब उसमें से तीक्ष्ण बुद्धि पैदा होती है।

दादाश्री : हाँ, जैसे-जैसे मॉरैलिटी उत्पन्न होती है न, वैसे-वैसे तीक्ष्णता बढ़ती जाती है। और दूसरा, जब ईमानदारी बढ़ जाती है, तब बुद्धि तीक्ष्ण होती जाती है।

मॉरैलिटी में समा जाते हैं सर्व गुण

प्रश्नकर्ता : क्या मॉरैलिटी से बुद्धि तीक्ष्ण होती है?

दादाश्री : हाँ, बहुत तेज हो जाती है।

प्रश्नकर्ता : तो मॉरैलिटी की प्रेक्टिस किस तरह करनी है? जीवन किस तरह से जीना है?

दादाश्री : कुछ भी हो लेकिन किसी का नुकसान न हो, ऐसी नीतिमत्ता, ऑनेस्ट। मॉरैलिटी में अन्य सभी गुण आ जाते हैं। कहते हैं न, 'ऑनेस्टी इज़ द बेस्ट पॉलिसी' (प्रामाणिकता वह श्रेष्ठ निति है)। वही सब से उत्तम है, बस।

मॉरल में तो, दुनिया में जितने भी गुण-अवगुण हैं, यदि उनमें से एक भी अवगुण न रहे, तब वह मॉरल कहलाएगा। मॉरल बाइडिंग।

प्रश्नकर्ता : कितना मुश्किल है?

दादाश्री : नहीं, लेकिन हमारे पास जो गुण हैं, उतने गुणों से मॉरल बाइडिंग है। अन्य सभी गुणों की अभी ज़रूरत नहीं है और कठीन क्यों? दो जन्मों में तो हो ही जाएगा। सब पूरा हो जाएगा तब।

बनो मॉरल ज्ञानी के संग

मॉरल बनने के बाद तो मोक्ष में जा सकते हैं।

प्रश्नकर्ता : इसलिए मॉरल होने के लिए शक्ति माँगते रहना है?

दादाश्री : अब तो फटाफट होता जाएगा, जैसे-जैसे उधार चुकता जाएगा, वैसे-वैसे।

प्रश्नकर्ता : दादा, हमें आगे बढ़ना है लेकिन अंधेरा है। तो शक्ति दीजिए कि उजाला हो जाए।

दादाश्री : हाँ, वह ठीक है। शक्ति देते रहते हैं। आप आया करो न! जब तक हम यहाँ हैं, तब तक पूरी तरह से लाभ ले लो। आप यह लाभ उठा लोगे न, तो काम हो जाएगा। एक जन्म सिन्सियर रहो न, दादा के प्रति!

– **जय सच्चिदानंद**

निश्चय मांगे सिन्सियारिटी

अभी तो उम्र कम है न, इसलिए मोहनीय परिणाम अभी तक आए नहीं हैं। उन सभी कर्मों के उदय तो आए ही नहीं न? इसलिए अभी से ही अगर हमने यह सेट कर रखा हो तो कोई परेशानी नहीं आएगी। यह ज्ञान, यह निश्चय सबकुछ हम ऐसे सेट करके रखें ताकि इस मोहनीय परिणाम में भी हमें डगमगा नहीं दे। इस काल की बड़ी विचित्रता यह है कि इस काल के सभी लोग महा मोहनीयवाले हैं। इसलिए उन्हें 'कैसे हो?' पूछना। लेकिन उनसे नज़र नहीं मिलानी चाहिए, नज़र मिलाकर बातचीत भी नहीं करनी चाहिए। इस काल की विचित्रता है, इसलिए कह रहे हैं। क्योंकि सिर्फ यह विषयरस ही ऐसा है कि जो(हमारा) सर्वस्व गँवा दे। सिर्फ अब्रह्मचर्य ही महा-मुश्किलवाला है। नहीं तो सुबह-सुबह तय कर लेना कि 'इस जगत् की कोई भी विनाशी चीज़ मुझे नहीं चाहिए', फिर उसके प्रति सिन्सियर रहना है। अंदर तो बहुत से लबाड़ हैं कि जो सिन्सियर नहीं रहने देते, लेकिन यदि निश्चय के प्रति सिन्सियर रहे तो फिर उसे कोई चीज़ बाधक नहीं रहेगी।

जितना तू सिन्सियर, उतनी ही तेरी जागृति। यह हम तुझे सूत्र के रूप में दे रहे हैं और छोटा बच्चा भी समझ जाए, इतने विवरण सहित दे रहे हैं। लेकिन जो जितना सिन्सियर, उतनी उसकी जागृति। यह तो साइन्स है। जितनी इसमें सिन्सियारिटी उतना ही खुद का (काम) होता है और यह सिन्सियारिटी तो ठेठ मोक्ष की ओर ले जाती है। सिन्सियारिटी का फल, मोरालिटी आ जाती है। जो थोड़ा-थोड़ा सिन्सियर हो और यदि वह सिन्सियारिटी के पथ पर चले, उस रोड पर चले, तो वह मोरल हो जाता है। संपूर्ण मोरल हो गया, मतलब परमात्मा प्राप्त होने की तैयारी हो गई, इसलिए पहले सिन्सियारिटी की ज़रूरत है। मोरालिटी तो बाद में आएगी।

एक बार तू सिन्सियर हो जा। जितनी चीज़ों के प्रति तू सिन्सियर है, उतना ही उन चीज़ों को जीत लिया और जितनी चीज़ों के प्रति अनसिन्सियर, उतनी नहीं जीत पाए। इसलिए सभी जगह सिन्सियर हो जाओगे तो तुम जीत जाओगे। इस जगत् को जीतना है। जगत् को जीत लोगे तो मोक्ष मिलेगा। जगत् को जीते बगैर कोई मोक्ष में नहीं जाने देगा।

प्रश्नकर्ता : चोर नीयत होना, वह निश्चय की कमी कहलाएगी?

दादाश्री : कमी नहीं कहते, इसमें तो निश्चय ही नहीं है। कमी तो निकल जाती है सारी, लेकिन उसमें तो निश्चय ही नहीं है।

प्रश्नकर्ता : लेकिन नीयत यों थोड़ी-थोड़ी चोर होती है या पूरी चोर होती है, ऐसा फर्क होगा न उसमें?

दादाश्री : चोर हुई मतलब पूरी ही चोर। थोड़ी चोर किसलिए? हमें मकान बनाना हो तो पहले से नक्शे में दरवाज़े सुधार लेने चाहिए, दो खिड़कियाँ चाहिए हमें। बाद में चोरी करना, वह क्या अच्छा कहलाएगा? विचार तक भी क्यों आए ज़रा सा? अब्रह्मचर्य का विचार क्यों आना चाहिए? मैंने आपसे क्या कहा है? उगने से पहले उखाड़कर फेंक देना, वर्ना इसके जैसा जोखिम कोई नहीं है।

(परम पूज्य दादाश्री की ज्ञानवाणी में से संकलित)

दादाई जगकल्याण मिशन - सत्संग हाइलाईट्स

26 अगस्त : रक्षाबंधन के अवसर पर पूज्यश्री ने अडालज त्रिमंदिर में सभी भगवानों की पूजा करके राखी बाँधी और रक्षाबंधन की महत्ता समझाकर विधि करवाई और श्री सीमंधर स्वामी और दादा भगवान की आरती हुई। समग्र मंदिर व जॉयजेन्टिक हॉल में बैठे हुए सभी महात्माओं ने भाव से यह त्यौहार मनाया।

27-30 अगस्त : लींच (मेहसाणा) में पूज्यश्री के साथ आप्तसंकुल के भाईयों व बहनों के लिए दो-दो दिनों के शिविर का आयोजन हुआ। अलग-अलग ग्रुप के लिए सत्संग के माध्यम की सही समझ दी। पूज्यश्री के साथ सत्संग व इन्फॉरमल समय बिताकर साधक भाईयों व बहनों ने अभेदता और आत्मीयता का दिव्य अनुभव किया।

1-2 सितम्बर : दादानगर (अडालज) में आयोजित सत्संग व ज्ञानविधि कार्यक्रम में 2700 मुमुक्षुओं ने आत्मज्ञान प्राप्त किया जहाँ पर खास तौर पर कई मुमुक्षु अन्य राज्यों से भी ज्ञान प्राप्त करने आए थे। अडालज में बहुत लंबे समय के बाद हुई इस ज्ञानविधि में हमेशा से ज़्यादा भीड़ देखी गई। ज्ञानविधि से पहले प्रश्नोत्तरी सत्संग में गुजराती व हिन्दी भाषी मुमुक्षुओं द्वारा कई प्रश्न पूछे गए।

3 सितम्बर : अडालज त्रिमंदिर में जन्माष्टमी पर्व बहुत आनंद व उमंग से मनाया गया। सुबह भगवान श्री कृष्ण पर पूज्य नीरू माँ के सत्संग विडीयो से पर्व का शुभारंभ हुआ। जॉइजेन्टिक हॉल में 'शुद्ध प्रेम' टॉपिक पर आधारित शोर्ट फिल्म व बच्चों के लिए ज्ञानभरे पपेट शॉ का आयोजन हुआ। बीस हज़ार से भी ज़्यादा लोगों ने भगवान श्री कृष्ण व उनके बाल स्वरूप के दर्शन किए। शाम को पूज्य श्री दीपक भाई मंदिर में पधारे और दर्शनार्थियों को दर्शन का लाभ मिला। रात को जॉइजेन्टिक हॉल में हुए विशेष भक्ति कार्यक्रम में भगवान श्री कृष्ण व दादा भगवान के भक्तिपदों की धूम मची। रात को बारह बजे पूज्यश्री ने मटकी फोड़ी और भगवान श्री कृष्ण का जन्मोत्सव मनाया गया। भगवान श्री कृष्ण का पूजन हुआ और मक्खन-पंजरी का प्रसाद चढ़ाया गया और अंत में श्री कृष्ण भगवान की आरती करके जन्माष्टमी महोत्सव सम्पन्न हुआ।

5 सितम्बर : दादानगर के लिए गुरुपूर्णिमा व पर्यूषण के अवसर पर पूज्यश्री के दर्शन का आयोजन हुआ। सुबह 10 से 1 और शाम को 5-8 के बीच 11000 से भी ज़्यादा महात्माओं ने दर्शन का लाभ उठाया और उस दौरान चरणविधि, प्रार्थना, असीम जय-जयकार, पद गुंजन व आरती हुई।

6-13 सितम्बर : पर्यूषण पर्व के अवसर पर दादानगर हॉल में आप्तवाणी श्रेणी-13 (उत्तरार्ध) के 'ज्ञान-दर्शन-चारित्र' व 'निरालंब' प्रकरण पर वाचन और पूज्यश्री द्वारा विशेष विवेचन हुआ। पारायण के दौरान परम पूज्य दादा भगवान, पूज्य नीरू माँ और पूज्य दीपक भाई की ज्ञानदशा, शुद्धात्मा पद की जागृति और निरालंब दशा के बारे में तरह तरह के स्पष्टीकरण हुए। इस पारायण में शाम की आरती के बजाय सामायिक रखी गई जिससे महात्माओं को ठीक से सामायिक करने का मौका मिले। सभी महात्माओं ने इसका स्वगात किया। 8 तारीख को महात्माओं ने दादाई गरबा का भी आनंद उठाया। सहायता केन्द्र में महात्माओं ने आप्तपुत्र व आप्तपुत्रियों द्वारा समाधान प्राप्त किया। अंतिम दिन में कुछ महात्माओं ने सब के सामने खुद के द्वारा दूसरों को दिए गए दु:खों की आलोचना की और एक-दूसरे के पैर छूकर माफी माँगी। अंत में पूज्यश्री ने पूरी ज़िदगी में हुए दोषों के लिए संवत्सरी प्रतिक्रमण करवाया। महात्माओं को पारायण में नई ही समझ की प्राप्ति और आलौकिक आनंद की अनुभूति हुई। पूज्यश्री ने साल 2019 के केलेन्डर का विमोचन किया। पारायण की समाप्ति के बाद पूज्यश्री ने तुरंत ही सिंगापुर, न्यूज़ीलैन्ड व ऑस्ट्रेलिया के सत्संग प्रवास के लिए प्रस्थान किया।

आत्मज्ञानी पूज्य नीरू माँ और पूज्य दीपकभाई के आशीर्वाद प्राप्त आप्तपुत्रों के सत्संग कार्यक्रम

हल्द्वानी **दिनांक : 19 अक्तूबर** **समय :** दोपहर 1-30 से 4 **संपर्क :** 8279486240
स्थल : अरुणोदय धर्मशाला, मंदिर (बरसाती मार्ग) के नजदीक, नवाबी रोड, हल्द्वानी, जि.-नैनीताल (उत्तराखंड).

हमीरपुर **दिनांक : 20-21 अक्तूबर** **समय :** रात 8-30 से 10 **संपर्क :** 9418763312
स्थल : शिवदत्त शर्मा का घर, मानविन गाँव, तेहसील-भोरंज, जिल्ला-हमीरपुर, पोस्ट-मानविन (हिमाचल प्रदेश).

गाज़ियाबाद **दिनांक : 20 अक्तूबर** **समय :** शाम 4-30 से 7 **संपर्क :** 9557831357
स्थल : V3S इन्द्रलोक अपार्टमेन्ट बिल्डिंग, न्याय खंड-I, इंदिरापुरम, गाज़ियाबाद (उत्तर प्रदेश).

नई दिल्ली **दिनांक : 21 अक्तूबर** **समय :** सुबह 9 से 2 **संपर्क :** 9810098564
स्थल : शाह ऑडिटोरियम, राजनिवास मार्ग, सिविल लाईन्स, नई दिल्ली.

जलंधर **दिनांक : 22 अक्तूबर** **समय :** शाम 4 से 6-30 **संपर्क :** 9779233493
स्थल : ईगल प्रकाशन कोम्प्लेक्स, सेन्ट्रल मिल कंपाउंड, दामोरिया ब्रिज के नजदीक, पुराना रेल्वे रोड, जलंधर.

रुड़की **दिनांक : 23 अक्तूबर** **समय :** शाम 4-30 से 6-30 **संपर्क :** 9719415074
स्थल : महाराजा प्रताप हाई-स्कुल, लक्सर दिल्ही लिंक रोड, सूरजनगर, धन्धेरा, रुड़की, हरिद्वार (उत्तराखंड).

दहेरादून **दिनांक : 24 अक्तूबर** **समय :** सुबह 10-30 से 12-30 **संपर्क :** 9012279556
स्थल : प्रेम भवन, ग्राफिक एरा युनिवर्सिटी के पास, पोस्ट ऑफिस रोड, क्लेमेंट टाउन, दहेरादून (उत्तराखंड).

'दादावाणी' के वार्षिक सदस्यों के लिए सूचना

आपको आपकी दादावाणी पत्रिका की सदस्यता समाप्त हो रही है उसका पता कैसे चलेगा? यदि आपको मिली इस महीने की दादावाणी पत्रिका के कवर पर लगे हुए लेबल पर ग्राहक नं. के बाद # हो तो यह आपकी अन्तिम दादावाणी पत्रिका है। उदा. DHIA12345#. दादावाणी पत्रिका रिन्यु कराने के लिए पेज नं. 3 पर दर्शाये गए मूल्य अनुसार मनी आर्डर या डिमान्ड ड्राफ्ट (पेयेबल अहमदाबाद) त्रिमंदिर अडालज के पते पर भेजें। साथ ही अपना नाम, पूरा पता (पिनकोड के साथ), फोन-मोबाइल नंबर, इ-मेल आदि आवश्यक जानकारी दें।

'दादावाणी' के सभी सदस्यों के लिए सूचना

हिन्दी और अंग्रेजी भाषाओं में दादावाणी पत्रिका हर महिने 15वी तारीख को पोस्ट की जाती है। जिन महात्माओं को 'दादावाणी' पत्रिका विलंब से या तो अनियमित रूप से मिलती है, वे पूर्व प्राप्त पत्रिका के कवर पर अपना नाम, पता, पीनकोड आदि जाँच कर लें। यदि उसमें कोई भूल हो तो आपका ग्राहक नं, पूरा नाम-पता, पीनकोड के साथ लिखकर मोबाईल नं. 8155007500 पर SMS करें। आप अडालज त्रिमंदिर के पते पर पत्र से या dadavani@dadabhagwan.org इ-मेइल आइडी पर इ-मेइल से भी सूचित कर सकते हैं। जिससे आपकी यहाँ दर्ज की गई जानकारी में सुधार किया जा सके। यदि आपको दादावाणी का अंक न मिले तो उपर दिए गए कोई भी माध्यम से हमें सूचित करें। यदि अंक स्टोक में होगा तो आपको फिर से भेजा जाएगा।

त्रिमंदिरो के संपर्क : अडालज : (079) 39830100, **राजकोट :** 9924343478, **भूज :** 9924345588, **गोधरा :** 9723707738,
अंजार : 9924346622, **मोरबी :** (02822)297097, **सुरेन्द्रनगर :** 9737048322, **अमरेली :** 9924344460, **वडोदरा:** 9574001557
अन्य सेन्टरों के संपर्क : अहमदाबाद: (079) 27540408, **मुंबई:** 9323528901, **वडोदरा (दादा मंदिर) :** 9924343335,
दिल्ली: 9810098564, **बैंगलूर:** 9590979099, **कोलकता:** 9830080820
यु.एस.ए.-केनेडा: +1 877-505-DADA (3232), **यु.के.:** +44 330-111-DADA (3232), **ऑस्ट्रेलिया:** +61 421127947

आत्मज्ञानी पूज्य दीपकभाई के सानिध्य में आगामी सत्संग कार्यक्रम

अडालज त्रिमंदिर

7 नवम्बर (बुध) रात 8-30 से 10-30 - **दिपावली के अवसर पर विशेष भक्ति**

8 नवम्बर (गुरु), सुबह 8-30 से 1, शाम 5 से 7 -**नूतन वर्ष के अवसर पर पूजन-दर्शन**

2 दिसम्बर (रवि),**पूज्य नीरुमा के जन्मदिन पर विशेष कार्यक्रम**

सुबह 6-30 से 8-15, **प्रभातफेरी, प्रार्थना-विधि** तथा रात 8-30 से 10-30 - **भक्ति**

23 से 30 दिसम्बर - पारायण - आप्तवाणी 13 (उ.) (पेज. नं 388)से, **आप्तवाणी 14 - भाग-1** पर

सुबह 10 से 12-30, शाम 4-30 से 7-30 - **सत्संग-सामायिक**

चेन्नई

8 दिसम्बर (शनि) शाम 6-30 से 9-30 - **सत्संग** तथा **9 दिसम्बर** (रवि) शाम 4-30 से 8 - **ज्ञानविधि**

स्थल : अन्ना ऑडिटोरियम, भारतीय सर्जन असोसिएशन, टी.वी. टावर के सामने, चेपॉक, चेन्नई.

10 दिसम्बर (सोम) शाम 6-30 से 9-30 - **आप्तपुत्र सत्संग**

स्थल : उमा सूरज पेलेस, अंगलमैन कोइल स्ट्रीट, चोलई, चेन्नई.

कार्यक्रम संबंधी तथा आवास की सुविधा के लिए **संपर्क :** 6369138166, 7904394945

पूज्य नीरूमाँ / पूज्य दीपकभाई को देखिए टी.वी. चैनल पर...

भारत
- **'दूरदर्शन'-नेशनल** पर सोम से शनि सुबह 8-30 से 9, रवि सुबह 6-30 से 7
- **'दूरदर्शन'-मध्यप्रदेश** पर सोम से शनि दोपहर 3-30 से 4, रवि शाम 6 से 6-30 (हिन्दी में)
- **'दूरदर्शन'-बिहार** पर हर रोज़ सुबह 7 से 7-30 तथा शाम 6-30 से 7, शुक्र शाम 5 से 5-30 (हिन्दी में)
- **'दूरदर्शन'-उत्तरप्रदेश** पर सोम से शनि रात 8-30 से 9 (हिन्दी में)
- **'उड़ीसा प्लस' टीवी** पर सुबह 7-30 से 8 (हिन्दी में)
- **'दूरदर्शन'-सह्याद्रि** पर हर रोज़ सुबह 7 से 7-30 (मराठी में)
- **'दूरदर्शन'-चंदना** पर सोम और शुक्र रात 7-30 से 8 (कन्नड़ में)
- **'दूरदर्शन' गुजरात - गिरनार** पर सोम से शनि दोपहर 3-30 से 4 (गुजराती में)
- **'दूरदर्शन' गिरनार** पर हर रोज़ रात 10 से 10-30 (गुजराती में)
- **'अरिहंत' चेनल** पर हर रोज़ रात 8 से 9 (गुजराती में)
- **'दूरदर्शन'-गिरनार** हर रोज़ पर सुबह 9 से 9-30 (गुजराती में)
- **'अरिहंत'** पर हर रोज़ सुबह 3 से 3-30 तथा शाम 5 से 5-30 (गुजराती में)

USA-Canada
- **'SAB-US'** पर हर रोज़ सुबह 7 से 7-30 EST
- **'Rishtey-USA'** पर हर रोज़ सुबह 7-30 से 8 (हिन्दी में) EST
- **'TV Asia'** पर हर रोज, सुबह 7-30 से 8 EST (गुजराती में)

UK
- **'वीनस' टीवी** पर हर रोज़ सुबह 8 से 8-30 (हिन्दी में)
- **'SAB-UK'** पर हर रोज़ सुबह 7-30 से 8 - Western European Time (6.30am-7am GMT)
- **'Rishtey-UK'** पर हर रोज़ सुबह 7 से 7-30 Western European Time (6am-6-30am GMT)
- **'वीनस' टीवी** पर हर रोज़ सुबह 8-30 से 9 (गुजराती में)

Singapore - **'SAB- International'** पर हर रोज़ सुबह 8-30 से 9 (हिन्दी में)

Australia - **'SAB- International'** पर हर रोज़ सुबह 11-30 से 12 (हिन्दी में)

New Zealand - **'SAB- International'** पर हर रोज़ दोपहर 1-30 से 2 (हिन्दी में)

CAN-Fiji-NZ-Sing.-SA-UAE - **Rishtey-Asia'** पर हर रोज़ सुबह 7 से 7-30 (हिन्दी में) UAE Time (9am-9-30am IST)

USA-UK-Africa-Aus. - **'आस्था'** (डीश टीवी चेनल 849-युके, 719-युएसए) पर सोम से शुक्र रात 10 से 10-30

अक्तूबर 2018
वर्ष-13 अंक-12
अखंड क्रमांक - 156

दादावाणी

Date Of Publication On 15th Of Every Month
RNI No. GUJHIN/2005/17258
Reg. No. GAMC - 1500/2018-2020
Valid up to 31-12-2020
LPWP Licence No. PMG/HQ/36/2018-2020
Valid up to 31-12-2020
Posted at AHD. P.S.O. Sorting Office Set - 1
on 15th of each month.

जगत् का बेसमेन्ट : सिन्सियरिटी व मॉरेलिटी

पूरे जगत् का 'बेसमेन्ट' 'सिन्सियरिटी' और 'मॉरेलिटी', ये दो ही हैं। यदि वे दोनों सड़ जाएँ तो सब गिर जाएगा। इस काल में यदि 'सिन्सियरिटी' और 'मॉरेलिटी' हों तो वह तो बहुत बड़ा धन कहा जाएगा। 'सिन्सियारिटी' तो, जो मनुष्य दूसरों के प्रति 'सिन्सियर' नहीं रहता, वह खुद अपने लिए 'सिन्सियर' नहीं रह सकता। किसी के प्रति ज़रा भी 'इनसिन्सियर' नहीं होना चाहिए, उससे खुद की 'सिन्सियारिटी' टूटती है। और 'मॉरेलिटी' का अर्थ क्या है? खुद के हक़ का और सहज रूप से मिल जाए, वह सभी भोगने की छूट है। 'सिन्सियारिटी' और 'मॉरेलिटी', इस काल में ये दो चीज़ें हों तो बहुत हो गया। अरे ! अगर एक हो फिर भी वह ठेठ मोक्ष तक ले जाएगा। परंतु उसे पकड़ लेना चाहिए। 'ज्ञानीपुरुष का राजीपा (गुरुजनों की कृपा और प्रसन्नता)' और खुद की 'सिन्सियारिटी' इन दोनों के गुणा से सारे कार्य सफल हो सकते हैं।

- दादाश्री

Printed and Published by Dimple Mehta on behalf of Mahavideh Foundation - Owner. Printed at Amba Offset, B - 99, GIDC, Sector - 25, Gandhinagar - 382025.